अंक 1
जनवरी, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	10
संपादकीय	11
संपादक के नाम पत्र	13
माघ मेला - संगम के तीर	15
आप भी आ गए कोरोना	16
वेद माता गायत्री	18
रेकी, एक अद्भूत चिकित्सा पद्धति	19
भारत के महान संत श्रृंखला -2 संत ज्ञानेश्वर	21
नववर्ष के आगमन की आहट	22
प्रकृति का नायाब तोहफा "चाय"	23
विगत विस्मृतियाँ	25
पाज़ीटिव सोच	28
श्री सत्यनारायण व्रत कथा : विशेष	29
सुख दुख का सहोदर "मोबाइल"	32
समाज व संगठन	34
कद्दू	35
समाज समाचार	37
शाखा समाचार	38
शोक समाचार	40

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वर्ष 2020 के साथ ही कोरोना महामारी भी अपने अंतिम दौर में है। समय के इस कालखंड में अंतिम चरण में भय व डर के कारण सामाजिकता दम तोड़ती दिखाई दी। हमनें मनुष्य योनि में जन्म लिया है। इस नाते हमें संबंध बनाने व संबंधों को निभाने के संस्कार के गुण प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान के रूप में प्राप्त हुए हैं। हम माँ, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पुत्र, पुत्री आदि रिश्तो में जन्म से ही बंधे होते हैं। इस सामाजिक ताने – बाने के बंधन में हम जीवनपर्यन्त बंधे रहते है। विगत समय के कालखंड में हम एक बुरे दौर से गुजरे हैं। हमें मजबूरीवश घरों में कैद होना पड़ा। रिश्ते व रिश्तेदारों व अपनों से दूरी बनानी पड़ी, जो उनकी व हमारी सुरक्षा के लिए आवश्यक थी। अब इसे बुरे सपने की तरह भूलकर सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना होगा।

सामाजिक सद्भाव बढ़ाने के प्रयास शुरू करने होंगे। इस दिशा में लखनऊ मंडल के प्रयास सराहनीय है। सामाजिक सद्भाव हेतु सावधानीपूर्वक नियम अनुसार प्रयास किए जाने चाहिए। माना व्यक्तिगत तौर पर मिलना अभी भी संभव नहीं हो पा रहा है या मिलने में हिचकिचाहट है। मांगलिक कार्यों में भाग लेना भी संभव नहीं हो रहा है तो हमें आधुनिक संचार तंत्रों का उपयोग करना चाहिए। ऑनलाइन संवाद वेवनार, फोन पर सामूहिक चर्चा, फोन, वीडियो संवादज़ मोबाइल आदि द्वारा संपर्क कर अपनों के हाल-चाल लिए जा सकते हैं। मेरा विश्वास है कि आप लोग पूर्व से ही इस प्रक्रिया को अपना चुके होंगे। इस लड़ाई में शारीरिक दृढ़ता के साथ मानसिक सहयोग व दृढ़ता भी आवश्यक है।

मेरे आवहान पर अन्नपूर्णा योजना व छात्रवृत्ति योजना में निरंतर सहयोग के लिए संपूर्ण समाज का एक बार पुनः बहुत-बहुत आभार। 27 दिसंबर 2020 को कार्यकारिणी हेतु कानपुर समाज का उत्साहपूर्ण, स्नेहिल आमंत्रण मिला। कोरोना की वस्तु स्थिति व स्वजनों की स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के मद्देनजर बड़े बोझिल मन से इस बैठक को स्थगित करने व ऑनलाइन करने का कष्टप्रद निर्णय करना पड़ा। समय की आवश्यकता सामाजिक कार्यों में प्रशासनिक निरंतरता के मद्देनजर बैठक ऑनलाइन करने का सामाजिक निर्णय लिया गया। कानपुर समाज की ओर से कानपुर सभा के इस आत्मीय आमंत्रण हेतु बहुत-बहुत आभार। आशा है परिस्थितियों के ठीक होते ही हम निकट भविष्य में जरूर कानपुर में एकत्र होंगे।

महासभा से आपकी अपेक्षाओं, भविष्य की कार्य योजना हेतु आप सभी के अमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं। आपके अमूल्य सुझाव हमारे प्रयासों के सटीक आंकलन व मार्गदर्शन हेतु आवश्यक है। वृद्ध आश्रम हेतु जगह के चयन के प्रयास व चर्चाओं के दौर अनवरत जारी है। परिणामों के शीघ्र सम्मुख आने की आशा है।

हम लोग एक गुल्लक योजना प्रारंभ कर रहे हैं। जिसे हम सभी अपने अपने घरों में रखेंगे तथा उसमें अपने परिवार में होने वाले विभिन्न मांगलिक अवसरों पर समाज के नाम पर दान उस में डाला जाएगा। जैसे पूर्व में हमारे समाज में सभी कार्यक्रमों में अछूता निकालने की प्रथा रही है। इसमें एकत्र राशि को वर्ष में एक बार चैत्र की नवरात्रि के प्रथम दिन समाज को सौंप दिया जाएगा। बूँद बूँद से ही घड़ा भरता है। मेरा मानना है कि आप सभी के सहयोग से यह एक सामाजिक सहयोग का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत होगा।

विगत वर्ष में हमने अपने अनेक वरिष्ठ सहयोगियों को खोया है। जिसमें हमारी पत्रिका के संपादक द्वय श्री रवींद्रनाथ जी (इटावा/मुंबई) व दिनेश चन्द्र जी (मैनपुरी) , श्री पृथ्वी नाथ जी,मुंबई (पूर्व उपसभापति,महासभा), हमारे सहयोगी स्व. पृथ्वी नाथ जी (कानपुर) व स्व. राजेश नाथ जी (इंदौर), स्व. यतीश जी,लखनऊ (पूर्व अध्यक्ष,लखनऊ मंडल) आदि । मैं इन सभी को संपूर्ण समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

संपादकीय

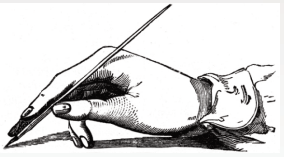

वर्ष 2020 के साथ ही कोरोना काल भी अस्ताचल की ओर है। हमको कोरोना काल को सकरात्मक सोच के साथ विचार करें तो हम पाएंगे कि यह हमें हमारे खोए हुए मित्र संयम, धैर्य, सहचारिता, दृढ़ता से मिलन करता गया। कोरोना काल मे लोगों ने परिवार के साथ उत्तम समय गुजारा, घर के कार्यों में हाथ बंटाया, परिवार संग फिल्में देखी। आवागमन पर बंदिश के कारण घर में तरह-तरह के व्यंजन बनाने के पर्व गृह स्वामिनी के संचालन में आयोजित हुए। पड़ोसियों, स्वजनों के आवश्यकता की पूर्ति कर सामाजिक धर्म का निर्वाहन भी किया। वर्ष 2020 में नए तरीके से जीवनयापन करने व मानसिक दृढ़ता की शिक्षा दे गया। मानसिक रूप से दृण इस लड़ाई में विजय रहे। अनेक बड़ी-बड़ी हस्तियों तक को इस जंग में हार का सामना करना पड़ा। अचानक आई विपदा के कारण विषम विपरीत परिस्थितियों से साक्षात्कार हुआ। नए वर्ष में नई सुबह की लालिमा चहुँ ओर विखरेगी। नई भोर का नया सूरज आशा की नई किरण हम सभी के जीवन में नया उल्लास, उमंग व उत्साह का संचालन करेगी। महामारी की दवा का आगमन हो चुका है।शीघ्र ही हम इस महामारी के प्रत्यक्ष व अंजान भय से मुक्त होंगे।

हम फिर सब साथ बैठेंगे, गप्पे लगाएंगे, चवाव करेंगे, ठहाके गूंजेंगे, पालागन पालागन का हमारा जातीय घोष गुंजित होगा। बच्चों का शोर होगा। हम चतुर्वेदीयों का प्रिय शौक चवाब संचार उपकरणों फोन व मोबाइल की जंजीरे तोड़कर हमारे सामने प्रकट रूप में उपस्थित होगा।

लखनऊ मंडल की कार्यकारिणी की बैठक सराहनीय व सकारात्मक कदम है। सावधानी आज भी आवश्यक है। सामाजिकता को पुनः जागृत करना आवश्यक है। इस मानसिक लड़ाई को हमें मिलकर लड़ना होगा। इस दौर के योद्धाओं को बारंबार प्रणाम।

पौष माह का काल चल रहा है। शीत ऋतु अपने चरम पर पहुंचने को प्रयासरत है। नव वर्ष 2021 का प्रथम कुंभ मेला हरिद्वार में होने जा रहा है। विगत अंक में महासभा कार्यकारिणी का सचित्र संक्षिप्त परिचय को मिली आपकी सराहना के लिए बहुत-बहुत आभार। डॉ हेमंत जी (जयपुर), चित्रा जी (भोपाल), कैलाश जी (कासगंज) की आलेखों व उषा जी भोपाल की कहानी हाथ का छापा एवं विभा जी लखनऊ की भगवान पर भरोसा को भी सभी की भरपूर सराहना हेतु आभार। आपकी सराहना लेखकों का उत्साहवर्धन करती है। इस बार की पत्रिका में आपको युवा व वरिष्ठ हस्ताक्षरों का समावेश दिखाई देगा। हम यथोचित उत्साहवर्धन करें।

2020 हमारे लिए खुशियों के भी अनेक पल लाया। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के सभापति पद के चुनाव में सामाजिक कार्यकर्ता डॉ प्रदीप चतुर्वेदी निर्विरोध सभापति निर्वाचित हुए जो सामाजिक एकजुटता व दृढ़ता का परिणाम है। इसके लिए संपूर्ण समाज को साधुवाद। श्री दुष्यंत चतुर्वेदी (नागपुर) विधायक निर्वाचित हुए व श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी(मुंबई) राज्यसभा सदस्य निर्वाचित हुई। डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (लखनऊ) को उत्कृष्ट शौर्य हेतु राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया। महासभा के इतिहास में प्रथम बार ऑनलाइन अधिवेशन सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। श्री संतोष जी, (भोपाल) केंद्रीय हिंदी शिक्षक मंडल के सदस्य नियुक्त किए गए। चतुर्वेदी चंद्रिका के पूर्व संपादक भाई कुश जी का सतत व सक्रिय सहयोग हेतु कोटि कोटि वंदन। आगामा होली अंक को विशेष बनाने हेतु आपके सहयोग की अपेक्षा है। संबंधित प्रकाशन सामग्री भेजने का कष्ट करें।

यह वर्ष समाज के साथ साथ चतुर्वेदी चंद्रिका के लिए विशेष रूप से घातक रहा। इस वर्ष हमने अपने पूर्व संपादक द्वय रवीन्द्र नाथ जी (इटावा/ मुंबई) एवं दिनेश चन्द्र जी (मैनपुरी), प्रमुख इतिहासकार सतीश जी (आगरा), वरिष्ठ समाजसेवी व लेखक प्रकाश चंद्र जी, बादशाह वकील जी (फिरोजाबाद), कैप्टन व्यास जी (आगरा) प्रख्यात होली गायक विनय सोती जी (मैनपुरी), शिक्षाविद मिथलेश जी (कानपुर) को खो दिया। मैं उन्हें हम सब की ओर से स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। पुनः पालागन

– शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका, श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल)

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुधीर चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री भूपेंद्र चतुर्वेदी (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

संपादक के नाम पत्र

सम्पादकजी, पालागन

चंद्रिका सम्पादक चयनित होने पर आपको बहुत बहुत बधाई।आपके संचालन में चंद्रिका का पहला अंक बहुत बढ़िया रहा। आपने महासभा के प्रथम डिजिटल अधिवेशन को सफलतापूर्वक कवरेज देने का प्रयास किया और एक नया प्रयोग किया कि अधिवेशन से सम्बंधित सम्पादकीय लेखों को लेखक की फोटो के साथ छापने का प्रयास। आपकी फोटो वाली नयी पहल दिसम्बर माह की पत्रिका में दिखाई दी है। जब से चंद्रिका नियमित रूप से देखना शुरू किया है पहली बार पूरी कार्यकारणी सदस्यों के नाम फोटो सहित देखे हैं। इससे सदस्यों को नाम के साथ कार्यकारणी को पहचानने में आसानी रहेगी। इस बार करोना जैसी महामारी से सम्बंधित लेख भी पड़े जो समाज के लिये बहुत उपयोगी होंगे। सुकर क्षेत्र पर कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज का लेख पढ़ा जो बहुत बढ़िया जानकारी के साथ बचपन की यादें भी ताजा करा गया। जब बैलगाड़ीयों से गाँव जहाँगीरपुर से करीब करीब हर घर के लोग सौरों मेला देखने जाते थे।

– **राकेश चतुर्वेदी,** जयपुर

–0–

पालागन,

दिसंबर के अंक का मुखपृष्ठ देखकर अचंभित रह गया, प्रशंसा के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं। सामायिक सामाजिक समस्या कोविड ने सबको तन,मन,धन से ग्रसित कर मंझधार में डाल दिया है। केवल मुखपृष्ठ ही नहीं बल्कि कोविड संबंधित लेख भी उपयोगी है। चित्रा जी का वास्तुशास्त्र पर लेख उपयोगी बन पड़ा है। ऊषा जी व विभा जी के आलेख प्रशंसनीय है। पाठको के पत्र स्ववर्णित है। संपादकीय की प्रगति सामाजिक चेतना की प्रगति की वाहक बनेगी, ऐसा विश्वास है। अध्यक्ष जी का समाज में आनलाइन प्रगति के प्रयास अवश्य सफल होंगे। आशा है गुल्लक योजना महासभा की आर्थिक प्रगति की सहायक बनेगी। महासभा कार्यकारिणी परिवार का सचित्र परिचय कार्य करने का हौसला बढ़ाने में मदद करेगी। शुभकामनाओं सहित

– **दिलीप सिंकदरपुरिया,** लखनऊ

–0–

पालागन

अपने समाज की पत्रिका का मैं लंबे समय से सदस्य रहा हूँ और इसके आने की हर माह बेसब्री से इन्तज़ार करता हूँ। इस पत्रिका को मेरी माता जी बहुत ध्यान से पढ़ती है। हमेशा तारीफ करती है वह पत्रिका की एवं उसके संपादक की। अभी तक जितने भी सम्पादक हुए सबने अपने कार्यकाल में अतुल्नीय कार्य किया है और अब आप अपने समाज की इस सामाजिक धरोहर के सम्पादक बने हो।

आपके कार्यकाल की पहली पत्रिका पढ़ी। पढ़कर जो अनुभूति हुई उसकी व्यख्या नही कर सकता। जैसी उम्मीद थी आपके प्रति वैसा ही कार्य आपने अपने पहले प्रकाशन में कर दिखाया। आपकी पहली सम्पादकीय पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। कुश भाई का अपने अनुज के प्रति स्नेहासिक्त निश्छल प्रेम भाव दृष्टिगत हुआ। अब दूसरी पत्रिका भी प्राप्त हो चुकी है। उसमें भी आपने अपनी बहुमुखी प्रतिभा की छाप छोड़ी है। कोरोना वायरस पर इस बार की पत्रिका अपने सामाज को जागरूक करने में बहुत सहायक सिद्ध होगी। आपने लगभग सभी लेखकों की फ़ोटो के साथ उनकी लेखनी को एक नए अंदाज़ में प्रकाशित किया वो काबिलेतारीफ है। महासभा की पूरी कार्यकारिणी का परिचय सभी की फ़ोटो के साथ एक नई पहल की शुरुआत अपने ही अंदाज में की है। बहुत पुरानी फिल्म का एक गाना याद आ गया जो आज के दौर के लिए बहुत सहायक होगा....

साथी हाथ बढ़ाना एक अकेला थक जाएगा मिलकर बोझ उठाना : आपके द्वारा वर्षो से लगातार की जा रही सामाज सेवा अतुल्नीय है। आप द्वारा जो अपने सामाज को सेवाएं दी गयी है और जो दी जा रही है। वह अनुकरणीय है। समाज सेवा के लिए आपकी लगन अपने अनुजों को जरूर प्रेरित करेगी। आपका समाज प्रेम सदा यूंही ही बना रहे। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हमेशा है।

– **संजय मिश्रा,** कानपुर

–0–

पालागन, चतुर्वेदी चंद्रिका का माह दिसंबर 2020 का अंक प्राप्त हुआ। उपरोक्त अंक में प्रथम बार महासभा की समस्त कार्यकारिणी का सचित्र परिचय देखकर आश्चर्य हुआ। मेरी जानकारी में शायद ऐसा पहली बार हुआ है। उक्त संदर्भ में संपादक जी को बधाई। इसके अतिरिक्त चंद्रिका शिकायत हेतु बनाई गई कमेटी के माध्यम से प्राप्त शिकायतों का निस्तारण तीव्र गति से होगा। उचित होगा यदि बड़े शहरों में सहयोगियों की संख्या बढ़ा दी जाए। जिससे पत्रिका संबंधित शिकायत ना के बराबर रह जायेंगी। डॉ. प्रदीप जी व उनकी समस्त कार्यकारिणी को उत्कृष्ट कार्य की शुरुआत करने के लिए शुभकामनाएं।

– **मधुकर पाठक,** आगरा

अपील

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा समाजहित में चलायी जाने वाली सहायता योजना में महिला सहायता तथा छात्रवृतियाँ भी सीधे उनके बैंक खाते में त्रैमासिक भेजी जाती है। कुछ छात्रों की फ़ीस सीधे उन के स्कूल के खाते में स्थान्तरित की जाती है।

इस अपील के फलस्वरूप सम्मानित बांधवों से अब तक निम्नलिखित सहायता प्राप्त हुयी है :

1. अपने माता श्रीमती विमला देवी , पिता श्री छक्कन लाल जी , भ्राता श्री राकेश जी तथा दिनेश ज़ी की स्मृति में श्री महेश जी (बिजकौली/दिल्ली) द्वारा छात्र वृति हेतु रुपए 21,000/–
2. अपने पिता स्व. श्री बी. एन. चौबे @ घुर्रे जी की स्मृति में राजीव जी आगरा द्वारा महिला सहायता रुपये 6000 तथा छात्र वृति हेतु रुपए 6000 /–
3. अपने पिता इंजीनियर श्री दिनेश चंद्र चतुर्वेदी, मैनपुरी की स्मृति में श्री आदित्य चतुर्वेदी (मैनपुरी/मुम्बई) द्वारा छात्रवृति सहायता हेतु रुपए 51,000 /–
4. स्व.श्री सतीश चतुर्वेदी किनारी बाज़ार , आगरा की स्मृति में उनके परिजनों द्वारा छात्रवृति सहायता हेतु रुपये 21,000/–
5. श्री नीलकमल जी (क़ायमगंज/ कोलकाता) द्वारा छात्रवृति सहायता हेतु रुपए 12000/–
6. माताश्री कस्तूरी देवी तथा पिताश्री अमर नाथ जी की स्मृति में डॉ. अवध कुमार चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा/फ़िरोज़ाबाद/ ऋषिकेश) द्वारा छात्रवृति सहायता हेतु 12000/–
7. माताश्री माया देवी एवम्-पिता श्री उपेंद्र नाथ जी की स्मृति में तथा अपने पुत्र चि. वरुण एवं पुत्रवधु सौ. कनुप्रिया के विवाह की द्वितीय वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में छात्रवृति सहायता हेतु विष्णुकांत जी संरक्षक महासभा (फ़तेहगढ़/ नोएडा) द्वारा रुपये 12000/–

कुल प्राप्त राशि : रुपए 1,41,000 /–

डॉक्टर प्रदीप चतुर्वेदी , सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की ओर से निवेदन है इस योजना मे भी सहयोग करें तथा करवायें ।

महासभा खाता विवरण :

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा,
बचत खाता संख्या – 1006238340,
IFSC CODE- cbin0283533,
Central bank of India
शाखा–आनंद विहार, दिल्ली

बैंक में राशि स्थानांतरण की सूचना अपने email तथा मोबिल नम्बर के साथ मुझे सूचित करने की कृपा करे ।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मन्त्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9871170559

विज्ञापन की दरें

चतुर्वेदी चंद्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु नयी दरें (चतुर्वेदी बांधव हेतु) निर्धारित की हैं। ये दरें निम्नानुसार हैं -

क्र.	पृष्ठ	1 अंक	3 अंक	6 अंक	12 अंक
1.	अंतिम कवर-रंगीन-व्यवसायिक	12,000/-	35,000/-	70,000/-	1,25,000/-
2.	भीतरी कवर-रंगीन-व्यवसायिक	10,000/-	30,000/-	50,000/-	1,00,000/-
3.	पूरा पृष्ठ-रंगीन-व्यवसायिक	8,000/-	24,000/	45,000/-	85,000/-
4.	पूरा पृष्ठ-श्वेत-श्याम-व्यवसायिक	6,000/-	18,000/-	30,000/-	60,000/-
5.	आधा पृष्ठ-श्वेत-श्याम-व्यवसायिक	4,000/-	12,000/-	20,000/-	40,000/-
6.	चौड़ाई पृष्ठ-श्वेत-श्याम	2,500/-	7,500/-	12,500/-	25,000/-
7.	शुभकामना संदेश-श्वेत-श्याम-1/6 चौथरा	1500/-	4500/-	8000/-	12,000/-
8.	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ-श्वेत-श्याम	3,000/-			
9.	श्रद्धांजलि-आधा पृष्ठ-श्वेत-श्याम	1500/-			
10.	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ-रंगीन	6,000/-			
11.	श्रद्धांजलि-द्वितीय/तृतीय कवर-रंगीन पृष्ठ	8,000/-			
12.	बधाई/शुभकामना पूर्ण पृष्ठ रंगीन	6,000/-			
13.	श्वेत श्याम 1/4 पेज	1,000/-			

सचिव,श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

माघ मेला - संगम के तीर

- सुगंधा चतुर्वेदी, लखनऊ

मेला अर्थात मिलन समारोह, हिंदूत्व की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को लेकर हर मेले का अलग-अलग महत्व है। हिंदुस्तान के हर क्षेत्र में ऋतुओं एवं त्यौहारों के अनुसार मेले लगते हैं। प्रयागराज के माघ मेले का भी अपना ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व है।

हिन्दू पुराणों के अनुसार प्रयाग में गंगा, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती नदी के संगम तट पर भगवान ब्रह्मा ने प्राकृष्ठ यज्ञ का सफल आयोजन करने के बाद प्रयाग को तीर्थ राज कहा था। तभी से प्रयाग, प्रयागराज हो गया।

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन से अमृत कलश के निकलने पर भीषण संग्राम हुआ। देवराज इन्द्र जब अमृत कलश लेकर भागे, मान्यता है तब कलश से अमृत छलक कर हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में गिरा था। तभी से इन चारों स्थानों पर कुंभ पर्व मनाया जाता है। इन स्थानों पर कुंभ पर्व बारह साल बाद ही मनाया जाता है। इन स्थानों पर पवित्र नदियों में स्नान करने का विशेष अध्यात्मिक महत्व माना जाता है। साथ ही लोगों में आत्मा की शुद्धि एवं अध्यात्मिक उन्नति के लिए यहां स्नान के साथ ही ध्यान एवं दान करने का प्रचलन है।

लेकिन प्रयागराज में तभी से प्रतिवर्ष माघ मेले का आयोजन जोर-शोर के साथ होता है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि सम्राट हर्षवर्धन प्रतिवर्ष प्रयागराज माघ मेले में आकर एक माह रहकर स्नान,ध्यान करने के साथ ही व्यापक स्तर पर दान वह पुण्य कार्य करते थे। सम्राट हर्षवर्धन के संगम स्थल पर एक माह कुटिया बनाकर रहने, स्नान, ध्यान एवं दान करने को कल्पवास का नाम दिया गया। दूसरी कथा है कि भृगु देश निवासी एक ब्राह्मण बाल विधवा कल्याणी ने संगम पर साठ माघ मास में स्नान-दान कर वहीं अपने प्राण त्याग दिए। माघ स्नान से प्राप्त पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म में तिलोत्तमा के रूप में अवतार लेकर देवलोक पहुंच गई।

प्रयागराज में रहते हुए माघ मेले का आनन्द लेने का कई बार सौभाग्य मिला। आज भी माघ मेले का जिक्र आते ही पावन गंगा तट ही नहीं अपितु विशाल संगम क्षेत्र आँखों के सामने जीवंत हो उठता है। मेले के लिए संगम क्षेत्र में एक महीने के लिए टेंटों (जिन्हें कुरिया बोला जाता है) का एक शहर बस जाता है। जहां सरकार सड़क, पानी, बिजली के साथ ही अस्पताल एवं थाना जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करती है। एक तरफ प्रसिद्ध नागा साधुओं सहित विभिन्न अखाड़ों का जमावड़ा के साथ ही धर्मगुरुओं के अखाड़े लगाए जाते हैं। दूसरी तरफ पर्यटक विभाग द्वारा संचालित विभिन्न सुविधाओं वाले आवास भी उपलब्ध रहते हैं। जिनमें आगुंतक अपनी अपनी सुविधानुसार रहकर माघ मेले का आनन्द लेते हैं। बहुत लोग आम कुरिया (टेंट) में एक माह रहकर कल्पवास करते हैं। कल्पवासियों की दिनचर्या भोर में जल्दी उठकर स्नान ध्यान से शुरू होती हैं। प्रायः ये लोग एक समय ही स्वनिर्मित भोजन करते हैं। इसके अलावा अन्य समय विभिन्न आश्रमों में चलने वाले भजन-कीर्तन, प्रवचन सुनने में व्यतीत होता है। प्रमुख सरकारी विभागों की प्रदर्शनी का भी आयोजन होता है।

माघ मेले का सर्वप्रमुख स्नान मकर संक्रांति पर होता है। स्थानीय लोगों में इसे खिचड़ी का स्नान कहा जाता है। इस दिन तिल, खिचड़ी, पापड़ के दान की प्रथा है। मकर संक्रांति के साथ ही मौनी अमावस्या, पूर्णिमा, शिवरात्रि के दिन शाही स्नान होता है, जिसमें सबसे पहले नागा साधु, फिर तय नियमों से अखाड़ों का स्नान होता है।

पुराणों के अनुसार माघ मास में स्नान-दान करने से सातों जनम सफल हो सकते हैं। ऐसा लगता था कि 2021 में माघ मेले का आयोजन कोरोना के कारण संभव नहीं होगा, लेकिन अखाड़ा परिषद एवं राज्य सरकार ने माघ मेले के आयोजन की घोषणा कर दी है।

व्यंग्य

आप भी आ गए कोरोना

- नवीन चतुर्वेदी, जबलपुर

अतिथि देवो भवः हमारी पुरातन अवधारणा है। जब अवधारणाएं रूढ़ हो जाती है तो हमारे संस्कारों में समाहित हो जाती हैं। अतः कहा जा सकता है कि बिना पूर्व सूचना के यदि कोई हमारे द्वार पर पधारे तो उसको अतिथि मानकर स्वागत सत्कार करना हमारी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। हमारी यह अवधारणा इतनी दृढ़ है कि हमारी प्राचीन इतिहास और पौराणिक कथाएं इस अतिथि परायणता की गीत गाते नहीं थकते। सतयुग, त्रेता और द्वापर में ना भी जाए तो इसी कलयुग में अतिथि सत्कार कि अपनी इस परंपरा के कारण हमने अनेक शताब्दियों तक दासता भोगी है। हमारे प्रगतिशील मित्र पुराण कथाओं और हमारे महाकाव्य को मिथ मानकर मिथ्या की संज्ञा प्रदान कर ही देते हैं। अब ऐसा करते हैं कि पश्चिमी इतिहासकारों के प्रमाणिक आधार पर लिखे गए ऐतिहासिक ग्रंथों का आधार लेकर चर्चा को आगे बढ़ाते हैं।

यूनान के मैसोडोनिया दुनिया के एक छोटे से राज्य के राजा सिकंदर का हमने स्वागत किया। कालांतर में मध्य एशिया से शक, हूण, कुषाण, पारसी, ईरानी, यहूदी आदि अतिथियों का कभी हम लोगों ने स्वागत किया। मुगल सल्तनत के काल में ही पुर्तगाली फ्रांसीसी और अंग्रेज भी व्यापारी का मुखौटा लगाकर आए। हमने उन्हें भी अतिथि के रुप में स्वीकार कर लिया। 1757 से 1857 तक ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम पर भारत में लूट का सिलसिला या कहें दोहन का सिलसिला चलता रहा है। हमने उसका भी स्वागत किया।

कुछ समय पूर्व एक हिंदी फिल्म अतिथि कब आओगे हम भारतीयों के हृदय में व्याप्त अतिथि सत्कार की परंपरा का रूप कितना बदल गया है। इसे दर्शाता है। अन्यथा हमारी पुरातन परंपरा तो ऐसी थी कि हमने बिना बताए आने वाले रोगों को भी अतिथि मानकर देवी देवता के समान आदर प्रदान किया। चेचक एक ऐसा ही रोग था। जिसे हमने शीतला माता, बड़ी माता और छोटी माता कहकर पूजा और सम्मान प्रदान किया। नवीनतम सर्वव्यापी कोविड-19 को भी बिहार के कुछ इलाकों में कोरोना माता के रूप में पूजे जाने के समाचार अभी मिल ही रहे हैं। चेचक का रोग ही नहीं टीवी की बीमारी भी जब तक एक असाध्य रोग थी। तब तक हमने उसे राजकीय अतिथि जैसे ही सम्मान प्रदान किया। यहां तक कि हमने उसे टीवी जैसे अकिंचन नाम के स्थान पर राज यक्षमा जैसा राजसी नाम भी

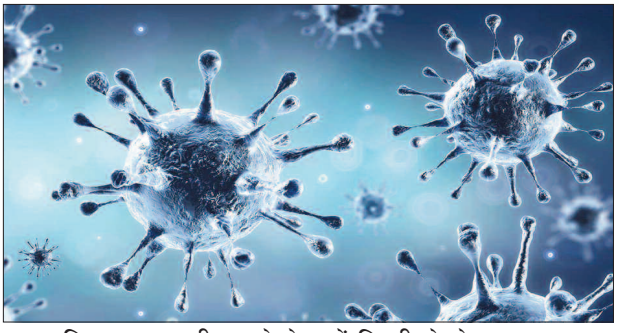

प्रदान किया। जब भी हमारे देश में किसी ने रोग का आगमन हुआ, तो अचानक बिना बताए आने के कारण हमने उसे अतिथि देवो भवः की परंपरा के आधार पर पूर्ण देवी सम्मान दिया। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात ऐसे ही एक आदरणीय अतिथि के रूप में श्रीमान प्लेग पधारे। यह चूहों के माध्यम से आए थे। अतः हमने इन्हें सवारी की समानता के कारण प्रतिष्ठा प्रदान की भारत में हजारों लोगों को इस देवीय अतिथि को प्रसन्न करने के लिए आत्म बलिदान करना पड़ा। हम अपनी बलिदानी परंपरा पर प्रसन्न थे। कालांतर में अंग्रेजों ने इसे बाहर का रास्ता दिखाया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में एक और विदेशी अतिथि स्पेनिश फ्लू का भी आगमन हुआ हमने इस स्थिति के समक्ष भी पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त किया। एक और महिमाशाली रोग मलेरिया भी है, जो विश्व युद्ध के समय विकराल रूप में फैला और आज भी संसार में प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मृत्यु का कारण बनता है। इसे हम भारत में विदेशी अतिथि की मान्यता इसलिए नहीं दे सकते, क्योंकि रामचरितमानस में लगभग मच्छर का उल्लेख मिलता है। मलेरिया होता था या नहीं इसका कोई उल्लेख रामचरितमानस में नहीं मिलता तुलसीदास जी ने यह जरूर कहा है कि

दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज कहुह नहिं व्यापा।

अतः भगवान राम के राज्य की सीमा में मलेरिया का प्रकोप नहीं था। सभी लोगों को विदेशी अतिथि कहना भी उचित नहीं होगा क्योंकि इससे तो भारत का अपमान हो जाएगा यदि भारत में भी अनेक रोग थे जिनके लिए हमारे मनस्वी, ऋषि - मुनि, धन्वंतरी, चरक, सुश्रुत, आयुर्वेद के माध्यम से अपना संपूर्ण जीवन रोगों के शोध और जड़ी बूटियों की तलाश में लगा दिया।

हमारा पर्यटन मंत्रालय प्रत्येक वर्ष भारत में पर्यटन की

असीम संभावनाओं का, उन्हें स्वीकार करते हुए करोड़ों रुपए की राशि प्रचार और प्रसार पर व्यय करता है। अब होता यह है कि विदेशी अतिथियों के साथ-साथ स्वाइन फ्लू भी भारत भ्रमण करता है तो विदेशी रोग के स्वागत का गौरव भी प्राप्त होता है। रोगों के विषय में हमारी भाषा की प्रतिबद्धता भी आत्मसमर्पण कर देती है। हम स्वाइन फ्लू को सूअर का बुखार नहीं कहते, क्योंकि ऐसा करने से हमारे विदेशी अतिथियों और विदेशी लोग को भी अपमान का अनुभव हो सकता है।

इन दिनों विश्व के व्यापार जगत में चीन की धूमधाम कुछ ज्यादा ही है। चीन सभी प्रकार के उत्पाद बहुतायत में विश्व में सभी देशों को कम से कम मूल्य पर उपलब्ध कराता है। इलेक्ट्रॉनिक सामान, कंप्यूटर, मोबाइल फोन, टीवी, माइक्रोवेव और अनेक प्रकार के विद्युत उपकरणों के साथ साथ स्टील और फैन शुई के भाग्यवर्धक सामग्री का निर्यात करता है। चीन की निर्यातक प्रवृत्ति ने आकाश की नई ऊंचाइयों को छूना प्रारंभ कर दिया है। सुना है विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति जो भारत में स्थित है उसका निर्माण भी चीन ने ही किया था। चीन एक साम्यवादी देश है। अतः वहां के लोग स्वयं तो कोई धर्म नहीं मानते, किंतु अन्य देशों की धार्मिक मान्यताओं का दोहनअवश्य करते हैं। भारत में होली के अवसर पर प्रयोग की जाने वाली पिचकारी, मुखौटे आदि भी उपलब्ध कराता है। कुछ भारतीय अभी भी टेशू आदि के फूलों से बने प्राकृतिक रंगों से तथा गोबरिया कीचड़ से होली मना कर चीन को धोखा दे रहे हैं। सुना है चीन के निर्यातक अगले वर्ष होली पर चीनी गोवर व कीचड़ भी निर्यात करने वाले हैं। इसी प्रकार हमारे लिए राखियां, चूड़ियां, महावर के साथ-साथ गणेश उत्सव पर प्लास्टर ऑफ पेरिस की सुंदर-सुंदर गजानंद की मूर्तियां भी चीन से ही आती है। अभी तक सूचना की पुष्टि नहीं हुई है किंतु शायद इस बार दशहरे पर रावण, कुंभकरण और मेघनाथ के पुतले ही बनकर आएंगे। भारत में केवल इन्हें असेंबल किया जाएगा, ताकि मेक इन इंडिया के नारे का रंग फीका ना पड़ जाए। दीपावली पर इलेक्ट्रिक झालर है। गणेश- लक्ष्मी की मूर्तियाँ, रंगोली के रंग, कंदील तो चीन से आते ही है। इस बार चीनी खील,बताशे और चीनी खिलौने भी चीन से आने की पूरी संभावना है। कुछ लोग कहते हैं कि चीन के सामान की कोई गारंटी नहीं होती। मैं पूछता हूँ कि गारंटी तो रिश्तों की भी कहाँ रह गई है। भगवान राम की ससुराल जहां सीता माता का जन्म हुआ, नेपाल भी अब इतने पुराने रिश्ते को निभाने से इंकार कर रहा है। हमारे देश में सभी दुकानों पर लिखा मिल जाएगा फैशन के इस युग में गारंटी की बात ना करें। संक्रांति के अवसर पर भारतीय आकाश में अब केवल चीन से बनी महंगी विभिन्न आकृतियों जैसे ड्रैगन, मेंढक, चमगादड़ जैसी पतंगे ही उड़ती दिखाई देती है। भारत में चाइनीस रेस्टोरेंट का एक वृहद जाल तो पहले से ही है। जहां रात दिन भारतीय युवा अपने आधुनिकता बोध का प्रदर्शन करने के लिए बेस्वाद चाइनीस व्यंजनों का उपयोग करते दिखाई दे जाते हैं। भारत में विवाह की दावत में भी भारतीय व्यंजनों के साथ-साथ एक स्टॉल चाइनीस का भी अवश्य होता है। यहाँ फेवरेट जींस और हाई पेंट पहने हुए युवक युवतियां चटकारे लेते हुए हमारे विश्व बंधुत्व किनारे का समर्थन करते मिल जाएंगे।

जड़ी बूटियों का निर्यात तो चीन बड़े पैमाने पर करता ही है। चीन के नीति निर्माताओं ने सोचा कि क्यों न वैक्सीन और एलोपैथिक दवाइयों के क्षेत्र में भी अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया जाए। पहले प्रयोग के तौर पर चीन ने वर्ल्ड फ्लू का निर्यात किया। सारे विश्व में चीन की प्रतिभा का लोहा माना। चीन मैं अपने एक नगर वुहान में विश्व की सबसे बड़ी वायरोलॉजी प्रयोगशाला की स्थापना की हुई है। पिछले अनुभवों का लाभ उठाते हुए करोना रोग के एक विकसित वायरस का चमगादड़ों के सहयोग से विश्वव्यापी प्रसार करने में उन्होंने सफलता प्राप्त की। भारतीयों की आस्था है कि धन की देवी लक्ष्मी का वाहन उल्लू है। चीनी वैज्ञानिकों को भी भारतीयों की आस्था में कुछ सार दिखाई दिया। उन्होंने सोचा जब निशाचर पक्षी उल्लू देवी लक्ष्मी का वाहन हो सकता है, तो चमगादड़ नव धनाढ्य देश चीन को लक्ष्मी की साधना में सहायक क्यों नहीं हो सकता।

अतः चीनी वैज्ञानिकों ने चमगादड़ को वाहन बनाकर कोरोना वायरस का नवीनतम शुरू कोविड-19 का निर्यात सारे विश्व में कर दिया। अब सारा संसार एक स्वर में गा रहा है, तुम्हीं ने दर्द दिया है,तुम्ही दवा देना। भारत और भी गहन भाव से का रहा है, गरीब जान के हमको ना तुम भुला देना। चीन के पास वैक्सीन तैयार है। बस सारा संसार घुटने के बल बैठकर चीन से कहे त्राहिमाम, त्राहिमाम। विश्व के नए तारणहार हम पर कृपा करो इतना होते ही चीन सारे जगत पर वैक्सीन की ऐसी बौछार करेगा कि लक्ष्मी माँ प्रसन्न होकर चीन के आकाश से स्वर्ण मुद्रा अर्थात डॉलर पौंड और फ्रैंक, यूरो की अमृत वर्षा कर देगी। दुनिया के अनेक देशों के वैज्ञानिक कोविड-19 का वैक्सीन तैयार कर रहे हैं। पता नहीं किस देश के वैज्ञानिक पहले सफलता प्राप्त कर चंचला लक्ष्मी को अपनी और आकर्षित कर ले। चीन किसी से पीछे नहीं रहना चाहता उसने कोविड-19 से भी अग्रगामी और प्रगतिशील वायरस को भी को निर्यात करने के लिए तैयार कर लिया है, और कोविड-19, 20, 21 भी कतार में है। भविष्य में जब कोरोना आपके द्वार पर दस्तक दे तो इस चीनी अतिथि का हार्दिक स्वागत करते हुए कहिएगा आप भी आ गए कोरोना ? यह आपका कौन अवतार है प्रभु? कोविड-20, 21 या वही पुराना कोविड -19। अतिथि आपका स्वागत है। अतिथि देवो भवः।

वेद माता गायत्री

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' वृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्द सामहम।
मासानां मार्गशीषोऽहमूतूनां कुसुमाकरः।।

भगवद् गीता में भगवान कहते हैं, मै समस्त वेदों में सामवेद और छन्दों में गायत्री हूॅ। समस्त महीनों में मैं मार्गशीर्ष(अगहन) तथा ऋतुओं में बसंत ऋतु हूॅ। सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वत्र एक नाद ऊॅ गूॅज रहा था इसलिये ऊॅ को ''अक्षर-ब्रह्म'' परमात्मा का स्वरूप व सृष्टि का आदि कारण माना गया है। ऊॅ को ही प्रणव कहते हैं। ब्रह्मा जी को सर्वप्रथम 'प्रणव' का बोध हुआ और प्रणव से ही सात व्याहृतियों का प्रादुर्भाव हुआ। तत्पष्चात ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम 24 अक्षरों वाले '' तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात'' गायत्री मंत्र की रचना की। इस 24 अक्षर वाले मंत्र के प्रत्येक अक्षर में ऐसे सूक्ष्म तत्व सन्निहित थे जिनके पल्लवित होनें पर वेद की चार शाखाएं -ऋग-यजु-साम और अथर्व उद्भूत हुई। इन चार वेदों से ही अनेक प्रकार की विद्याओं और शास्त्रों का जन्म हुआ, इसी कारण से 'गायत्री' को वेदों की माता कहा जाता है। सब मन्त्रों का आदि मूल होने के कारण गायत्री को 'महामंत्र' भी कहते हैं। गायत्री कल्पवृक्ष, अमृत, कामधेनु और पारस है। गायत्री का अर्थ है- गाय- जो पढ़े जपे गान करे। त्री- उसकी रक्षा करे वह गायत्री। गायत्री छन्द है। सन्ध्या में इनके नाम भी- गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप-वृहति, पंक्ति, त्रिष्टुप जगती लिए जाते हैं।

वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों आदि में गायत्री की महिमा का वर्णन किया गया है। अथर्व वेद के '' सूर्योपनिषद'' में भी गायत्री मंत्र है, प्रथम वेद ऋगवेद गायत्री से प्रारम्भ है। यजुर्वेद में वर्णित व्याहृतियुक्तं गायत्री मंत्र के आदि में प्रणव लगा कर गायत्री मंत्र-

ऊॅ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियों योनः प्रचोदयात।''

व्याहित शब्द का अर्थ है- व्या- व्यापक। ह्- हरने वाली। ति- ताप। अर्थात जो दैहिक, दैविक और भौतिक तापों को हरने वाली सर्वत्र व्यापक है उसे ''व्याहृति'' कहा जाता है। व्याहृतियॉ सात है- भूः-भुवः- स्वः- महः- जनः-तपः और सत्यम। ये सातों व्याहृतियां यथार्थ में मंत्र स्वरूपा है। उक्त सातों व्याहृतियों में से पहली तीन व्याहृतियॉ भूः भुवः और स्वः को महाव्याहृति कहा जाता है। उक्त तीनों मंत्र जीवन के आधार भूत, उन्नति के सारभूत तथा तीनों तत्वों के प्रकाश हैं। अखिल ब्रह्माण्ड में जहॉ जो कुछ भी है, त्रिगुणमयी सृष्टि का वह सब कुछ उक्त तीन महाव्याहृतियों में अन्तर्निहित है।

'' वालां वालादित्य मण्डलम मध्यस्थां रक्त वर्णा''

मॉ गायत्री बाल आदित्य में विराजमान है, 4 मुख, 4 भुजाऐं हैं, दण्ड, कमण्डल, अक्षमाला और अभय मुद्रा है, हंस पर सवार है, ब्रह्म देव है, ऋग्वेद का प्रसार करती है, मैं उन्हें प्रणाम करता हूॅ। चतुर्वेदियों का परम्परा प्राप्त मंत्र गायत्री है, चतुर्वेदी समाज में इसका जो सम्मान है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इसकी उपासना ही सबसे बड़ी साधना एवं दीक्षा रही है। गायत्री की साधना से ही समाज में अनेक जातीय रत्न हुए। जिन्होनें समाज की गरिमा को नई उचाइयॉ प्रदान की।

गायत्री साक्षात ब्रह्म स्वरूपा हैं, सत- चित और आनन्द को देने वाली तथा मुक्तिदायिनी है। गायत्री मंत्र- ऊॅ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियों योनः प्रचोदयात।'' में हम तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले भगवान सूर्य नारायण के उत्तम तेज का ध्यान करते हैं, वह हमारी बुद्वि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें। ऊॅ- परमात्मा, भूः- पृथ्वी, भुवः- अन्तरिक्ष, स्वः- स्वर्ग, तत- वह, सवितुर- सूर्यनारायण का, वरेण्यम-उत्तम, भर्गो- तेज, देवस्य- देव का, धीमहि- ध्यान करता हूॅ, धियो- बुद्वि को, यो-जो, नः- हमारी, प्रचोदयात- प्रेरित करें। मंत्रो में सर्वश्रेष्ठ इस एक गायत्री मंत्र की उपासना से ही समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है तथा भक्ति- मुक्ति प्राप्त होती है।

।। जय माता की।।

रेकी, एक अद्‌भूत चिकित्सा पद्यति

- चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

रेकी जापानी भाषा का एक शब्द है जो रे और की से मिलकर बना है। रे का अर्थ है सर्वव्यापी और की का अर्थ है जीवन शक्ति अर्थात ₹रेकी₹ का अर्थ है सर्व व्यापक – जीवन शक्ति। कुछ लोग इसे प्राणशक्ति या संजीवनी शक्ति के नाम से भी जानते हैं। यह एक आध्यात्मिक अभ्यास पद्यति है जिसका विकास 1922 में डॉक्टर मिकाओ उसुई ने किया था। यह तनाव और उपचार सम्बन्धी एक जापानी विधि है जो कि काफी कुछ योग अथवा योगभयास जैसी है। एक मान्यता के अनुसार रेकी का उद्‌गम स्थल भारत वर्ष है। सहस्त्रों वर्ष पूर्व भारत में स्पर्श चिकित्सा का प्रचलन था। जिसके प्रमाण अथर्ववेद में पाए गए हैं।

रेकी एक साधारण विधि है किन्तु इसे पारम्परिक तौर पर नहीं सिखाया जा सकता है। विद्यार्थी इसे रेकी मास्टर से ही सीख सकता है। यह अध्यात्म आधारित अभ्यास है। हमारे शरीर में चिंता, लोभ, क्रोध,उत्तेजना आदि जैसे भाव शरीर के अंगों एवं नाड़ियों में हलचल पैदा करते हैं। जिससे रक्त धमनियों में कई विकार उत्पन्न हो जाते हैं। शारीरिक रोग इन्ही विकृतियों का परिणाम हैं। यह शारीरिक रोग मानसिक दशा तथा रोगों से प्रभावित होते हैं। रेकी रोग को मूल से नष्ट करती है तथा स्वास्थ्य के स्तर को ऊपर उठाती है। रेकी के द्वारा मानसिक भावनाओं को संतुलन मिलता है तथा शारीरिक तनाव, बेचैनी व दर्द से छुटकारा मिलता है।

रेकी गठिया, दमा, कैंसर, रक्तचाप, पक्षाघात, अल्सर, एसिडिटी, पथरी, बवासीर, मधुमेह, अनिद्रा, गुर्दे के रोग, स्त्री रोग , शक्तिन्युनता, मानसिक असंतुलन जैसी कई बिमारियों को दूर अथवा नियंत्रित करने में समर्थ है।

मनुष्य हमेशा से सुख, शांति, समृद्धि एवं आनंद की अभिलाषा करता है। जीवन में इन्हें पाने का सरल उपाय रेकी है। रेकी ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से आप मौन और शांत मन का अनुभव कर सकते हैं। इसमें आपके शयन को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रतीक चिन्ह एवं मंत्र शामिल हैं। रेकी के विशेषज्ञ नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर उसे सकारात्मक ऊर्जा में बदलने पर जोर देते हैं। उपचार करते वक़्त रेकी विशेषज्ञ के हाथ गर्म हो जाते हैं। यह विद्या दो दिन के शिविर में सिखाई जाती है। इस शिविर में रेकी प्रशिक्षक द्वारा व्यक्ति को सुसंगता (शक्तिपात/दीक्षा) प्रदान की जाती है। इससे व्यक्ति के शरीर स्थित शक्ति केंद्र जिन्हे हम चक्र कहते हैं। पूरी तरह गतिमान/सक्रिय हो जाते हैं। जिससे उनमें जीवन शक्ति का संचार होने लगता है। रेकी का प्रशिक्षण मास्टर एवं ग्रैंड मास्टर पांच चरणों में देते हैं |

1. प्रथम डिग्री
2. द्वितीय डिग्री
3. तृतीय डिग्री
4. करुणा रेकी
5. मास्टर्स रेकी

रेकी ध्यान में चार क्रियाएं हैं : 1. मन की सफाई : अपनी पीठ सीधी कर एक चटाई पर लेटे या बैठें। शांत और तनावमुक्त होने का प्रयास करें। एक गहरी सांस लें। आप अपने सभी सुखद पलों और अच्छाइयों के बारे में सोचिए। इस सोच के साथ गहराई से श्वांस छोड़ें और साथ ही अवसाद,भय और चिंता जैसी नकारात्मक भावनायें अपने सिस्टम/तंत्र से बाहर निकलते हुए महसूस करें। इस तरह एक दो बार सांस लें और छोड़ें और फिर देखें किस तरह आपका तन और मन हल्का एवं आरामदायक प्रतीत होता है।

2. चक्र बल : प्रत्येक शरीर में सात चक्र होते हैं। रीढ़ के आधार से लेकर सिर के ऊपर तक जो शरीर के ऊर्जा केंद्र है। इन्ही चक्रों के ऊपर हाथ रखकर रेकी दी जाती है। इस ऊर्जा प्रवाह के द्वारा आप अपने को फिर से जीवंत महसूस करेंगे और काया कल्प का अनुभव करेंगे।

3. हाथों द्वारा हीलिंग: हाथों द्वारा हीलिंग सिर से पाँव तक की जाती है। इसमें अपनी हथेलियों को सिर के ऊपर ले जाकर हाथों को आपस में पकड़ें और ध्यान से अपने शरीर को सुनें। ऐसा करते में धीमी और गहरी सांस लें। इस समय नाकारात्मकता को अपने शरीर से निकल दें। सकारात्मा को अपने अंदर बढ़ाएं और आराम करें। इस प्रकार यह सिर से पाँव तक पूर्ण की जाएगी।

4. करुणा रेकी : इसमें स्वर्गदूतों, मेहराबों और आरोही स्वामी के साथ कई आध्यात्मिक ध्यान शामिल हैं। इसके प्रतीक पारम्परिक रेकी से काफी भिन्न हैं। इस प्रणाली में प्रतीकों की कई भूमिकाएं हैं जो शारीरिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्टार पर काफी गहरे असंतुलन को ठीक करती है।

रेकी शक्ति का पांचवा चरण उच्च कोटि की विद्या है, जो व्यक्ति को रेकी की प्रत्येक प्रणाली में निपुण बना देती है। रेकी,

शक्ति के अथाह सागर के साथ साथ अतुल्य व अदभुत शक्तिपात या दीक्षा शिष्यों के भीतर अनंत दिव्य शक्ति को जाग्रत कर देती है। रेकी का पांचवा चरण आध्यात्मिक शक्ति को चरम बिंदु तक ले जाता है। इस क्रम में आपको शक्तिपात के इतिहास, इसके प्रकार, सावधानियाँ एवं नियम को ध्यान में रख कर रेकी दीक्षा का परिचालन करना चाहिए। नकारात्मक शक्तियों से बचाव की विधि तथा विकट समस्याओं की उपचार प्रक्रिया का ज्ञान इसमें शामिल है।

ग्रांडमास्टर-शिप कोर्स : आर्थिक शक्तिपात में धनोपार्जन के लिए जूझता मनुष्य अपना सारा जीवन इसी चक्रव्यूह में फँस कर बर्बाद कर देता है। सर्वप्रथम आर्थिक शक्तिपात आपकी धन सम्बन्धी समस्या का निवारण करेगा। माँ लक्ष्मी की कृपा आप पर सदैव बनी रहेगी और धन धान्य से आपका घर सदैव भरा रहेगा।

मधुरम शक्तिपात : प्यार, सम्मान, विश्वास और धैर्य किसी भी रिश्ते की नींव होते हैं। रिश्तों में आयी दरारों को भरने के लिए इस मधुरम शक्तिपात का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग से रिश्ते सकारात्मक ऊर्जा से भर जाते हैं एवं रिश्तों में मधुरता आ जाती है। एक रेकी ग्रैंड मास्टर ,रेकी की हर विद्या का अभ्यस्त कहलाता है। एक प्रामाणिक गुरु ही स्वयं के रेकी केंद्र का आरम्भ कर सकता है।

रेकी की प्रसिद्धि का प्रमुख कारण इसका एकदम सरल एवं असरदार होना है।इसका प्रयोग व्यक्ति में निहित ऊर्जा के स्तर को नियंत्रित करने और विश्रांति के लिए किया जाता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति स्वयं को अधिक ऊर्जावान महसूस करता है एवं उसकी कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

ऐसा मन जाता है कि हमारे ऊर्जामय शरीर में ऊर्जा के कई छोटे बड़े केंद्र (चक्र) होते हैं। यह ऊर्जा चक्र जितने सक्रिय होते हैं, उतना ही हम ऊर्जावान, सकारात्मक, रचनात्मक एवं विकसित आध्यात्मिक स्तर के होंगे। रेकी इन्ही छोटे बड़े २४ ऊर्जा चक्रों को हाथ के स्पर्श से नियंत्रित करने का अभ्यास है। रेकी ब्रम्हांड कि ऐसी शक्ति है जो हर इंसान में छिपी होती है और वह खुद इससे अनभिज्ञ होता है। रेकी कार्यशाला में इस शक्ति को जाग्रत किया जाता है। रेकी द्वारा हम हाथों को एक विशेष आकृति में रख कर मरीज़ को कष्ट वाले स्थान पर स्पर्श कर भी हील कर सकते हैं।

डिस्टेंस रेकी : रेकी कि इस पद्यति में दूर दूसरे मोहल्ले / शहर में बैठे व्यक्ति / मरीज़ को हम दूर बैठ कर भी रेकी भेज सकते हैं एवं "हीलिंग" प्रदान कर सकते हैं।

रेकी को शांत माहौल में करना सबसे बेहतर माना जाता है। इसे किसी भी स्थान पर किया जा सकते है। यदि मरीज़ को अनुकूल लगे तो उस स्थान पर हलकी लाइट के साथ हल्का संगीत भी चलाया जा सकते है। रेकी देने वाले हॉल में सुगन्धित अगरबत्ती व धूप जलाये रखना भी श्रेयस्कर मानते हैं।

रेकी के 5 सिद्धांत :

1. बस आज के लिए गुस्सा मत करो।
2. आज चिंता भी न करें।
3. आभारी होना।
4. कड़ी मेहनत करना।
5. दूसरों के प्रति दयालु बने रहे।

रेकी हीलिंग करने से पहले मास्टर एक खास तरीके से अपने आस पास कि ऊर्जा को दिशा देकर रोगी के शरीर में प्रवेश करता है, इसके लिए रेकी मास्टर को मरीज़ कि शारीरिक एवं मानसिक स्थिति का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

रेकी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अनेक फायदे हैं,जैसे शारीरिक एवं मानसिक शांति, शरीर कि प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना, आध्यात्मिक एवं भावनात्मक क्षमता को बढ़ाना। मुझे निजी तौर पर रेकी का सर्वोत्तम गुण लगा कि हम मीलों दूर बैठ कर दूसरे व्यक्ति का इलाज कर सकते हैं। रेकी चिकित्सा का एक प्राकृतिक रूप है जो अच्छी भावनाओं और अच्छी ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। स्पर्श चिकित्सा के समय इसमें कोमल स्पर्श का प्रयोग किया जाता है।

हर व्यक्ति के शरीर कि परिधि में उसका अपना ऊर्जा क्षेत्र होता है जिसमे गड़बड़ होने से व्यक्ति बीमार होता है। रेकी मास्टर या हीलर रेकी द्वारा इसे नियंत्रित या ठीक करते हैं।

रेकी के कुछ हलके फुल्के नियम भी हैं जैसेः

1) रेकी मांग कर लेने से शीघ्र फलदायी होती है।

2) रेकी में आभार और धन्यवाद का आदान प्रदान भी आवश्यक है।

3) एक और महत्त्वपूर्ण बात है रेकी लेने के बाद गुरुदक्षिणा देना।

मान्यता है कि उपरोक्त बातों का पालन न करने से रेकी का प्रभाव प्रायः न्यूनतम या समाप्त हो जाता है। रेकी में महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि रेकी प्रारम्भ करते समय हम रेकी,गुरुजन, माता पिता , इष्ट देवी देवता और अपने पूर्वजों को प्रणाम करते हैं। रेकी समाप्त करते समय उपरोक्त सभी को पुनः प्रणाम कर धन्यवाद देते हैं। यहाँ मरीज़ को भी धन्यवाद दिया जाता है। रेकी व्यक्ति कि प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करती है जिससे शरीर रोग मुक्त बनता है।यह हर उम्र के व्यक्ति के लिए लाभकारी है। नवजात शिशु से लेकर बुजुर्ग तक, हर कोई रेकी का लाभ उठा सकते है। रेकी से पेड़,पौधे एवं पालतू जानवरों को भी फायदा पहुँचता है। रेकी उपचारकों का मत है कि रेकी से भविष्य में आने वाली समस्याओं का बचाव मुमकिन है।

भारत के महान संत श्रृंखला -2 संत ज्ञानेश्वर

- मनोज चतुर्वेदी, जयपुर

भारत में बहुत से महान संत हुऐ हैं जिनमें से एक, संत ज्ञानेश्वर का नाम बहुत आदरणीय है। दक्षिण भारत और महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर की ईश्वर समान पूजा होती है।

संत ज्ञानेश्वर ने मात्र 21 वर्ष के जीवन में ज्ञान और आध्यात्मिकता का ऐसा भंडार अर्जित किया जो अविश्वसनीय है। संत ज्ञानेश्वर का जन्म महाराष्ट्र के अपेगांव (आज का पैठन, औरंगाबाद के निकट) सन 1२७५ में हुआ था। उनके पिता विट्ठल पंत और माता रूक्मिणी बाई थीं। दोनों ही बहुत धार्मिक थे लेकिन कोई संतान ना होने के कारण विट्ठल पंत हमेशा संन्यास लेने की बात करते रहते थे। एक दिन पत्नी को बिना बताए विट्ठल पंत बनारस चले गए। वहां उनकी भेंट स्वामी रामानंद से हुई। विट्ठल पंत ने स्वामी रामानंद से दीक्षा के लिए प्रार्थना करी और झूठ कह दिया कि वे अविवाहित हैं। विट्ठल पंत का नाम चैतन्याश्रम हो गया। रूक्मिणी बाई को पति के संन्यास का मालूम पड़ा और इसे ईश्वर की इच्छा मान कर उन्होंने ईश्वर में और ध्यान लगाना शुरू कर दिया। इस तरह 12 वर्ष बीत गए। एक बार स्वामी रामानंद एपेगांव पधारे। रुक्मिणी बाई भी उनको प्रणाम करने गईं। स्वामी रामानंद ने रूक्मिणी बाई को संतान का आशीर्वाद दिया तो रूक्मिणी बाई हंसने लगी। जब स्वामीजी ने हंसनें का कारण पूछा तो रूक्मिणी बाई बोली कि उनके पति ने संन्यास ले लिया है और वे बनारस में हैं। स्वामी रामानंद को विचार आया चैतान्याश्रम भी अपेगांव से थे। वे रूक्मिणी बाई और उनके पिता को लेकर बनारस पहुंचे। वहां स्वामीजी ने चैतन्याश्रम से पूछा तो चैतन्याश्रम ने बहुत क्षमा मांगी कि उन्होंने झूठ बोला था। स्वामीजी ने आदेश दिया कि विट्ठल पंत गृहस्थ आश्रम में लौट जाएं। विट्ठल पंत पत्नी के साथ आलंदी गांव आ गये। विट्ठल पंत के चार संतानें हुईं। तीन पुत्र, निवृत्ति नाथ, ज्ञानेश्वर, सोपान और कन्या मुक्ति बाई। जब निवृति नाथ के यज्ञोपवीत का समय आया तो आलंदी के सारे ब्राह्मणों ने यज्ञोपवीत कराने से मना कर दिया कि शास्त्रों के अनुसार कोई संन्यासी वापस गृहस्थ नहीं हो सकता और इसके प्रायश्चित स्वरूप विट्ठल पंत और रूक्मिणी बाई को मृत्युवरण करनी होगी। विट्ठल पंत और रूक्मिणी बाई ने पास की नदी इंद्रायणी में जल समाधि ले ली किन्तु निवृति नाथ का यज्ञोपवीत नहीं हो सका। बालक निवृत्ति नाथ और ज्ञानेश्वर गांव में भीख मांग कर भाई और बहन का पालन करने लगे। बालक ज्ञानेश्वर को विचार आया कि उनके पिता और माता ने ब्राह्मणों के कहे अनुसार मृत्यु वरण करी थी तो उनके भाई बहन को एक शुद्धि पत्र मिलना चाहिए। इसके लिए वे भाई बहन के साथ पैदल पैठन (जो शिक्षा देने वाले ब्राह्मणों के लिए बहुत प्रसिद्ध था) पहुंचे और वहां ब्राह्मणों से शुद्धि पत्र के लिए प्रार्थना की। ब्राह्मणों ने उनका उपहास उड़ाया। संत ज्ञानेश्वर ने कहा एक ही ईश्वर सब में हैं और आप मेरा उपहास करते हैं। उसी समय एक भैंसा वहां से निकल रहा था। ब्राह्मण बोले यदि एक ही ईश्वर सब में है तो इस भैंसे से वेद पाठ कराओ। संत ज्ञानेश्वर भैंसे के पास गए और प्रेम से उसका सिर सहलाया। भैंसा वेदों का उच्चारण करने लगा और तब तक करता रहा जब तक ब्राह्मण लोग वेदों का उच्चारण करते रहे। ब्राह्मणों ने 11 वर्ष के संत ज्ञानेश्वर से बहुत क्षमा मांगी और उन्हें उनके भाई बहन को शुद्धि पत्र मिला। पैठन से संत ज्ञानेश्वर अपने भाई बहन के साथ पास के गांव नेवासा पहुंचे जहां उन्होंने

एक स्त्री को अपने पति की मृत देह पर विलाप करते देखा। ज्ञानेश्वर ने उसके पति का नाम पूछा तो स्त्री बोली सच्चिदानंद। संत ज्ञानेश्वर ने मृत देह के ऊपर हाथ फेरा और बोले सच्चिदानंद उठो। सच्चिदानंद फौरन उठ बैठे। सच्चिदानंद, संत ज्ञानेश्वर के शिष्य बने और बाबा सच्चिदानंद के नाम से संत ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी को लिपिबद्ध किया। संत ज्ञानेश्वर ने गीता पर मराठी भाषा में जो ज्ञानेश्वरी नामक टीका लिखी है वो आज भी पूरे महाराष्ट्र में गाई जाती है। ज्ञानेश्वरी इतनी उत्कृष्ट भाषा में लिखी है कि आज तक कोई कवि या लेखक ज्ञानेश्वरी में से एक भी शब्द नहीं निकाल पाए या किसी और शब्द से बदल पाए हैं। ज्ञानेश्वरी से बहुत से संत प्रभावित हुए जिनमें संत तुकाराम, संत एकनाथ प्रमुख हैं। संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर के परम मित्र थे और दोनों ने बहुत सी भक्तिपूर्ण रचनाएं लिखी हैं। सन 1296 में आलंदी में संत ज्ञानेश्वर ने समाधि ले ली। संत ज्ञानेश्वर महाराज का समाधि स्थल सिद्धेश्वर मंदिर, आलंदी में आज भी है। हर साल आषाढ़ मास में समाधि स्थल से पंढरपुर में श्री विट्ठल(भगवान विष्णु) के मंदिर तक पालकी निकाली जाती है जिसमे हज़ारों लोग भाग लेते हैं। संत ज्ञानेश्वर के सभी भाई बहन भी बहुत उच्च कोटि के संत हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है, हर मनुष्य अपने पूर्व जन्मों के अच्छे और बुरे कर्मों के साथ पैदा होता है, संत ज्ञानेश्वर अवश्य ही ज्ञान, ईश्वरीय प्रेम और भक्ति के अतुलनीय भंडार के साथ पैदा हुए थे और अपना कार्य पूरा करके मात्र 21 वर्ष की आयु में ईश्वर में विलीन हो गए।

ऐसे महान संत को हम सबका हृदय से प्रणाम।

नववर्ष के आगमन की आहट
(एक नई रोशनी एक नई उम्मीद)

- इंजी. शिखर चतुर्वेदी, इटावा

नववर्ष नई उम्मीदें, नए सपनें, नए लक्ष्य और नए विचारो की उम्मीद लेकर आता है। ऐसा माना जाता है कि नववर्ष का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी से मनाया जाए, तो पूरा साल उत्साह और खुशियों के साथ बीतता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार नया साल 1 जनवरी से शुरू नही होता है, लेकिन 1 जनवरी को नया साल मनाना सभी धर्मो में एकता का संदेश भी देता है। नववर्ष एक नई उम्मीद और शुरूआत को दर्शाने के साथ हमें आगे बढने की सीख भी देता है।

जो हमने पुराने साल में किया और सीखा, सफल हुए या नही। उससे हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। अगर हम 2020 की बात करेंगे तो पाऐंगे कि बीते वर्ष ने हमें बहुत कुछ सिखाया है क्योंकि इस वर्ष जो घटित हुआ है। वह शायद आने वाले वर्षों में यह वर्ष इतिहास में जाना जाएगा क्योंकि इस वर्ष प्रकृति ने या फिर स्वयं मनुष्य के द्वारा जो छेड़छाड़ की गई उसकी सजा या कहें कठोर दण्ड (कोरोनावायरस) के रूप में हमें मिला। इस वायरस ने एक देश नही बल्कि पूरा विश्व की रफ्तार को थाम दिया। पूरे विश्व में लाखों लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गए। लाखों लोग बेरोजगार होकर घर में बैठ गए। कोरोना वायरस महामारी चीन से 30 जनवरी 2020 को भारत मे फैलने की पुष्टि हुई थी। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने 5 दिसम्बर तक 96,08,211 मामलों की पुष्टि की है। अकेले भारत मे इस महामारी से 1,39,700 करीब डेढ लाख मौते हुई है। हम सोच सकते है जब भारत देश में मौतों का आंकडा यह है तो पूरे विश्व में कितने लोग अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए है क्या हम अंदाजा लगा सकते है? शायद नही। ना जाने कितने लोगो ने दवा के अभाव ने तड़प-तड़प कर अपनी जान गवां दी। हजारो-लाखों घर बर्बाद हो गए। जब सम्पूर्ण विश्व में लॉकडाउन लागू हुआ तो मानो सम्पूर्ण जगत अपनी बेतहाशा रफ्तार से दौड़ रहा। एकाएक मानो थम सा गया हो। कुदरत ने अपने एक वार में सब तहस-नहस कर दिया। हम कुछ कर ही न पाए। बस असहाय होकर स्थिति को देखते रहे। मैने इस दौरान जो कुछ देखा, समझा, जाना कि आज भी इंसान कुदरत के हाथ की कठपुतली है। हम लोग चाहे कितने ही आधुनिक या कहें प्रगतिशील, विकसित हो गए हो, परंतु कुदरत के सामने सब व्यर्थ है। यह वर्ष हमसे बहुत कुछ छीनकर ले गया तथा बहुत कुछ सिखा कर गया। समय की कद्र, जीवन की कद्र, इन्सान की कद्र जो हम बेतहाशा दौड रहे थे। हमें थाम कर बहुत कुछ सिखा कर गया कि इन्सान के पास एक-दूसरे के लिए समय नही था। मिलने का। हम व्यस्त बहुत थे। जिन्दगी के बारे मे सोच नही रहे थे। मशीन बन कर रह गये थे। लेकिन इस महामारी ने हमें इन्सान के जीवन की कद्र सिखा दी। कहते है कि हर बुराई के पीछे एक अच्छाई छिपी होती है। अगर यह महामारी इन्सान के द्वारा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ है तो इसने हमें जीवन में ऐसा सबक सिखाया है कि हम शायद जीवन पर्यन्त याद रखेंगे और देखा जाए तो कुछ साल हमें शायद इसके साथ ही जीना हो। लेकिन हम इन्सान है और मैं समझता हूँ। वह इन्सान ही क्या जो अंधेरे से उजाले की ओर ना जाए। जीवन में बहुत से गहरे अंधेरे आते है, लेकिन वह सूर्य की पहली किरण के निकलते ही छटते जाते है। खत्म हो जाते है। हम आशा भी करेंगे कि 2021 हमारे लिए ही नही बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए बहुत खुशहाली, उम्मीदों तथा रोशनी से भरा हो, ताकि इस वर्ष जो कोरोना के रूप में लोगों ने जो देखा, भोगा उसकी पुनरावृत्ति कभी ना हो। आने वाला नववर्ष इतनी खुशियाँ, उम्मीदें लेकर आए कि इस वर्ष की सारी परेशानी दुखों को भुलाने में सहायक हो, लोग आगे बढे। देश की उन्नति हो अर्थव्यवस्था जो हमें कई वर्ष पीछे ले गई है वह पुनः नई ऊर्जा नई उमंगो के साथ आगे बढे। लोग खुशहाल बने। सम्पूर्ण मानवता का हित हो। सम्पूर्ण मानव जाति का विकास हो ताकि आने वाली पीढ़ी को संघर्षों का सामना ना करना पड़े। जो हमने अंजाने में गल्तियां की हो उन्हें उनका फल ना भोगना पडें। इसके लिए हमें दृढ़ निश्चय, कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। इसके लिए हमें पूर्ण रूप से प्रयास करने होंगे। तभी हम सब मिलकर इस कठिन समय का सामना कर सकेगें। इसके लिए यह पक्तियाँ पूर्ण रूप से सही है कि

खुदी को कर बुलंद इतना कि
हर तकदीर से पहले खुदा पूछे
बता तेरी रजा क्या है।

प्रकृति का नायाब तोहफा "चाय"

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

जनवरी का महीना शीत लहर कड़ाके की सर्दी और कमी पूरी कर दी बारिश ने महावट करके कोढ़ में खाज का मुहावरा याद आया। सुबह के 5:00 बजे और अलार्म घड़ी ने अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए टुन टुनाना शुरू किया। रजाई से हाथ निकालू या ना निकालू सोचने लगी।झोक में कहने लगी अरे उठ रही हूँ जैसे घड़ी सुन रही है। घड़ी के बटन पर हाथ लगाया,लगा जैसे बर्फ की सिल्ली पर हाथ ररव दिया। इतनी ठंडी। बड़ी दया आयी बेचारी पर। अपना कर्तव्य निर्वाहन करने के लिए रात भर ठिठुरी होगी। याद आया कलयुग हैं और कलयुग में जो ईमानदारी से कर्तव्य करता है। वह सदा पीड़ित तथा शोषित रहता है। मन में दया की भावना आई। घड़ी के ऊपर कोई कपड़ा ही डाल देती बेचारी इतनी ठंडी तो नहीं रहती। मगर मैं भी तो इसी कलयुग की हूँ। मुझे क्या मतलब कौन कितना कष्ट सहकर कर्तव्य का निर्वहन कर रहा है। सोचा थोड़ी देर लेटी रहूँ। फिर ध्यान आया नहीं उठी तो दूसरी घंटी बजेगी और वह होगी हमारे जेठ जी "उषा जी काय उठी नाय" बहू के कर्तव्य पालन का ध्यान आ गया।सीसी करते हाथ मलते उठी।

आप लोग मेरी जगह होते तो यही सोचते काश, "अलादीन का चिराग" हाथ में होता। उसे हुक्म देती गरमा-गरम अदरक की चाय लाओ। हाँ, मेरे आका चाय सामने होती। ईश्वर ने भी क्या नयाब पेय बनांया है चाय। बात बात में भूल गयी पहले भाईसाहब को चाय दे आऊँ। जल्दी से तोलिया सिर पर डाला भीगने से बचने के लिए। फिर चाय देने गयी। देखा भाईसाहब द्रोपदी चाय की प्रतीक्षा में थे। मैं द्रोपदी इस लिए कह रही हूँ कि उसमें पाँच वस्तुएँ पड़ती हैं। दूध, शक्कर, चायपत्ती, अदरक, इलायची। हर एक कहता है मैं न हूँ तो चाय न बनेगी पीने लायक। सब का अपना दावा चाय पर है। ₹आज देर कर दई, सो गयी ? उनसे क्या कहती मैं क्या कर रही थी। नाजाने क्या क्या सोच डाला। सोचो तो अच्छा मन के लडडू फीके क्यों ।

पहले जल्दी से चाय पी गरमा गरम ताकि नींद भागे। सर्दी भागी और ताजगी सी महसूस हुई। और उन अनाम लोगों को धन्यवाद दिया जिन्होंने चाय को इजाद किया। अगर चाय नहीं होती तो बहुत सारी परेशानियों का दुनिया को सामना करना पड़ता। सर दर्द, है तो चाय पी लो, जुकाम हो गया तो चाय पी लो, थकान है तो चाय पियो, शरीर गर्म करना है तो चाय पियो, समय पास करना है तो चाय पियो । सरकारी कार्यालयों के लिए तो चाय जादुई चिराग है। बाबू की ख़ुश करना है तो चाय पिला दो, चलो बाबू जी चाय पी के आते हैं और बाबू जी समझ गए आज तो जेब गर्म हो जाएगी चाय पीने से। क्यों भाई साहब बगल वाली सीट के भाई साहब कहां गए, चाय पीने गए हैं। मालूम नहीं चाय पीने में कितनी देर लगती है। 3 घंटे लग जाते हैं चाय पीने में, देखो कितनी अच्छी चीज है चाय काम ना करना हो तो कोई बहाना नहीं, चाय पियो।

चार दोस्त मिल गए तो चलो चाय पीते हैं और घंटों गप मारते रहते है। सारी दिल की भड़ास निकलती है चाय पीते समय। अच्छा लगता है चाय सारी समस्याओं का समाधान करती है। न्यायालय में वकील से मिलना है। अपनी समस्या का समाधान पूछना है, सलाह लेना है। वकील यहॉ से शुरू होगा, ऐसा करो जरा दो चाय का आर्डर दे आओ मेरे लिए तो फीकी रहेगी। आप जैसी पीना चाहो। बिना चाय का घूंट गले के नीचे उतरे वकील साहब की ना फीस तय होती है और ना कोई सलाह दे पाते।

शादी या कोई भी घर में उत्सव हो अच्छी से अच्छी व्यवस्था कर दो यदि मेहमान को चाय नहीं मिली,तो गई भैंस पानी में। क्या खाक व्यवस्था थी चाय तक तो मिली नहीं। तरसते रहे एक कप चाय को। ऐसे लोगों की एक खास बात होती है। कोई मेहमान आया, चाय बनी, जो उस समय वहां खड़े हैं, सब कह देंगे, थोड़ी सी हम भी लेंगे। जरा बढ़ा देना और चाय की स्थिति वहीं पहुँच जाती है। जितनी एक बार बनी थी। यदि मना कर दी तो बखेड़ा। फूफा जी रूठ जाएंगे। शादी, उत्सव में चाय ऐसा हथियार है जो निहत्थे पर भी पर भी बार कर सकता है। एक और खासियत है चाय की चाय पीने का कोई समय निश्चित नहीं आप जब चाहो जब पी सकते हो। कोई आये तो चाय पिलाना। नही तो कंजूस की लिस्ट में आ जाओगे। अरे हम तो उनके यहां जाकर पछताये, एक कप चाय को तो पूछी नहीं। हम भूल गए कि पिछली बार लंच के समय पहुंचे थे तो उन्होंने लंच

कराया था।

चाय में इतने गुण हैं। दोस्ती करनी है तो चाय पीओ। साथ साथ शादी के घर में कलह करानी है तो चाय का न मिलना, सबसे बडा हथियार। ईश्वर ने भी क्या चीज बना दी है चाय। जो चाय नहीं पीते उनसे मैंने पूछा जब सुबह उठते हो तो क्या पीते हो। कुछ नहीं फ्रेश होने के लिए तो पीनी पड़ती है ना। दुनिया का आठवां आश्चर्य लगता है, जो चाय नहीं पीते, इतने गुणों की खान प्रकृति का नायाब तोहफा से अपने को वंचित किए हुए हैं। होली पर गांव गयी। पति का बहुत आग्रह था मैं उनको मना करती नहीं। मुझे वहां चाय की परेशानी होगी। क्या मालूम हमारे घर की बुजुर्ग महिलाओं को पसंद हो या ना हो, बनी बनाई इमेज खराब हो जाएगी। आखिर चलती तो पुरुष की है ना। गाँव रात में पहुंची सवारी नहीं मिली, 2 किलोमीटर पैदल चलकर गए। बुरी तरह थक गए थे। मन में सोचा यार चाय मिल जाती तो कितना अच्छा होता। लेकिन जब मैंने सुना हमारी सासु मां खाना बनाने वाले से आवाज देकर कह रही थी, हल्कू चाय बनी कि नहीं, कितनी देर लगेगी, का बीरबल की खिचड़ी बन रही है। मुझे ऐसा लगा दौड़कर जाकर सासू माँ को गले लगा लूँ। इतनी खुशी हुई की उसे शब्दों में नहीं लिख सकती। बढ़िया दूध की चाय बन कर आई हाँ यह जरूर था कि चूल्हे पर बनी थी धुयें की खुशबू आ रही थी। खुशबू इलायची की मानकर चाय पी ली। रात में ही जाकर रसोई में चाय पत्ती, शक्कर का डिब्बा सब देख लिया और खाना बनाने वाले से कहा आप आराम से आ जाना चाय हम बना लेंगे।

सुबह गांव की सबसे बुजुर्ग चाची के आशीर्वाद लेने गए। बहुत बड़ा आश्चर्य मुझे हुआ थोड़ी देर में मैं उनको ही देखती रही थी। अच्छा हुआ घुंघट डाली थी इसलिए वह देख नहीं पाई। जाते ही सबसे पहले उन्होंने चाय पिलायी। मन में सोच रही थी, यह अकेली रहती हैं। इतनी जल्दी चाय कैसे बन गई। थोड़ी देर में मेरा ध्यान उनकी चारपाई के नीचे रखे हुए एक बहुत बड़े लोटे कीओर गया उस लोटे में करीब 20 कप चाय आती थी। उसी में से निकाल कर उन्होंने हमें पिलाई और खुद भी निकाल कर पीने लगी। चाय देखी बारबार गर्म करके बेचारी का रंग काला हो गया। कहने लगी भरत की देख रही हों बार-बार चाय कौन बनाए। इकट्ठी बना के रख ली। जो आए उसी में उसको दे दी, नहीं तो खुद पीली। ए भगवान 20 कप चाय अकेले दिन भर में पी जाती। मैंने उनसे डरते डरते कहा एक बात पूँछू, आप तो इतनी पुरानी हो, चाय पीना कैसे सीख लिया। पहले अंग्रेजों का जमाना था और कोई चाय पीता नहीं था। वह कंपनी थी। सोई बाने व्यापार करो, चाय तो इन लोगों ने सिखा दिया। चौराहे चौराहे पर चाय बनाकर मुफ्त में बांटते थे। हम लोग भी भर भर के ले आते। तब छोटे थे। ऐसे प्रचार करो। जब सब की आदत है गई तब बाँटना बंद कर दिया। फिर खरीदो और पियो। बस तबसे पीने लगे। ब्याह के आए तो यहां भी सब की आदत हो चुकी थी। मगर है अच्छी चाय, पी लो तो भूख ना लगत। चाची जी आपको तो मालूम होगा कि सबसे पहले चाय किसने खोजी। कैसे बनी। स्वाद कैसे मालूम पड़ा। सबसे पहले कौन से देश ने खोज की और प्रयोग किया

चाची जी शुरू हो गई। अंधा क्या चाहे दो आंखें चाची जी को कहानी सुनाने का अवसर मिल गया और हमें जानकारी प्राप्त करने का। सब पहले औषधी के रूप खाते थो। यह जंगली चाय के पौधा था।

सबसे पहले चाय की खोज भारत ने की थी 2000 वर्ष पहले। उस समय बौद्ध धर्म और जैन धर्म का प्रभाव था। बौद्ध धर्म के एक भिक्षुक थे जिन्होंने आगे चलकर जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के बहुत बड़े भिक्षुक बने। जंगल में रहते थे। एक बार उन्होंने एक वनस्पति की कुछ पत्तियां खा ली उन्होंने महसूस किया वह पत्तियां खाने के बाद उनके शरीर में कुछ ताजगी आ गई तथा नींद भी नहीं आई। फिर क्या था वह नींद आती तो पत्तियां खा लेत लगे। जिससे वह 5 साल तक सोए नहीं और उन्होंने अपना पूरा तप कर लिया। इससे यह बात सभी को मालूम पड़ गई की वनस्पति की पहचान हो गई थी। इसको खाने से ताजगी मिलती है। दूसरी कहानी उन्होंने यह बताया कि चीन का एक राजा था। नाम था शेन नेगूँ वह रोज सुबह गर्म पानी पीता था। 1 दिन उस गर्म पानी में एक वनस्पति की कुछ पत्तियां पड़ गई और वह पानी राजा को पीने को दिया गया। राजा ने महसूस किया कि यह पानी पीने से ताजगी भी आ रही है तथा इनका स्वाद भी अच्छा है। पता लगाया गया कि आज के पानी में किसने क्या डाला तब से वह नित्य गर्म पानी में वनस्पति कि वह पत्तियां डालकर पीने लगा और यहीं से खोज हुई चाय की। जब अंग्रेज आये उनको ध्यान चाय की झाड़ियों पर गया। उस समय कबीले वाले उबाल कर पीते थे। चीन से कुछ लोग यूरोप गये वहॉ शुरु हो गया उबाल कर पीना। यही प्रक्रिया व्यापार में बदल गई। यह बनस्पति पूर्वी बंगाल में आसाम में, दार्जिलिंग में अधिकतर पाई जाती है। जब भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी आई तो उसने अपने लाभ के लिए चाय का व्यापार करना शुरू कर दिया और चाय का प्रसार प्रचार करने के लिए लोगों को मुफ्त में चाय बांटने लगे। जब चाय की लत लग गई तो लोग खरीद खरीद कर पीने लगे और हम लोग आज की स्थिति में आ गए। अंग्रेज तो चले गए लेकिन हमें एक चाय पीने की आदत डलवा गये। ज्यादा चाय नुकसान करती है।बहुत देर होगयी थी। चाची की चाय का लोटा खाली होगया और कहानी भी। चाय प्रकृति का एक नायाब तोहफा है जो हमें प्रदान किया है। पाठकों कृपया आप भी जरूर पीना कलयुग का अमृत चाय।

विगत विस्मृतियाँ

- श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी, ग्वालियर

आज लीला कुछ अनमनी थी विवेक दौरे पर बाहर गये थे, बच्चे सुबह के निकले दिन ढले ही आते थे। पूरा दिन क्या करें ? मन ही नहीं लग रहा था। पहले अखबार फिर पत्रिका उठाई पर मन किसी में नहीं लगा। टी.वी देखने का भी मन नहीं था। अकेलापन दूर करने के लिए पुराने एलबम उठा लाई। एलबम पलटते ही नैनीताल के फोटो सामने आ गए। मन विगत स्मृतियों में खो गया। अब तो कितने साल बीत गए,कहीं जाना ही नहीं हो पाया है। विवेक की व्यवस्ततायें बढ़ गई है। 16 वर्ष बीत गए जब दोनों नैनीताल गए थे। लीला की तबीयत कुछ खराब रहने लगी थी।बहुत इलाज कराया,पर परिणाम कुछ नहीं निकला। शरीर से ज्यादा मन अस्वस्थ रहने लगा था।स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था।डॉक्टर ने हवा- पानी बदलने की सलाह दी थी। कहा था -दवायें तो अपना काम करेंगी,परंतु वातावरण बदलने से भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, कुछ दिनों के लिए किसी पहाड़ी स्थान पर जाना ज्यादा मुनासिब होगा बच्चे भी पीछे पड़ गए थे। हमारी चिंता छोड़िए,हम लोगों के पास मौसी जी आकर रह लेंगी। आप दोनों घूम कर आइए।विवेक जी बहुत दिनों से काम के दबाव से छुट्टी लेना चाह रहे थे।मनचाही मुराद पूरी होने जा रही थी। फोटोग्राफी का शौक था,बहुत दिनों से कैमरा अलमारी में बंद पड़ा था,अच्छा मौका मिल रहा था। तुरंत तैयारी शुरू हो गई दोनों चिंता -मुक्त हो नैनीताल के लिए निकल पड़े थे। मित्रों ने मजाक किया था -लगता है दूसरे हनीमून पर जा रहे है।

नैनीताल पहुंचते-पहुंचते शाम घिर आई थी। सुदूर पहाड़ी पर स्थित होटल में ठहरने की व्यवस्था पहले से कर ली गई थी।हरीतिमा से आच्छादित पगडंडी के बीच से पैदल जाने का रास्ता था।बलखाती सड़क से होती हुई टैक्सी होटल के द्वार तक पहुंच गई थी। रास्ते के नैसर्गिक सौंदर्य ने मन मोह लिया था। रास्ते की थकान मानो छूमंतर हो गई थी। कमरे के सामने ही टैरेस था। वे दोनों वही कुर्सीयों पर बैठकर सामने का नजारा देखने लगे थे। सामने ही तल्लीताल था,जिसमें डुबकी लगाने की तैयारी सूर्य देवता कर रहे थे।अद्भुत दृश्य था।लालिमा लिए झिलमिलाता स्वच्छ पानी,जिसमें कुछ नावे पर्यटकों को नौका विहार करवा रही थी। वही किनारे पर बहुत सारी बतखें दुनिया की हलचल से बेखबर जल कीड़ा कर रही थी।विवेक तो अपना कैमरा लेकर फोटोग्राफी में व्यस्त हो गए और वह खोई-खोई सी प्रकृति के नजारों को देख रही थी तभी एकाग्रता को भंग करती एक आवाज कानों में आई - शाम चाय यहीं पर लेगे अथवा कमरे में ?पीछे मुड़कर देखा तो एक बारह -तेरह वर्ष का लड़का हाफ निकर और शर्ट पहने विनम्र मुद्रा बनाये खड़ा था। वहाँ की सर्दी को देखते उसके शरीर पर काफी कम कपड़े थे, शायद पहाड़ों पर रहने के कारण सर्दी सकने का अभ्यस्त होगा।वहां रहने वालों का जीवन वैसे भी कठिन होता है। उत्तर विवेक ने ही दिया था -यही ले आओ, और हाँ, नाम क्या है तुम्हारा ? जी,शाब,मुझे बहादुर कहते हैं,तभी तुम्हें ठंड नहीं लगती है,है न लीला ने हंसते हुए पूछा था। नहीं मैम साहब लगती है,पर ज्यादा कपड़े पहन कर काम नहीं हो पाता। अभी स्वेटर डाल लूँगा .....थोड़ी देर बाद बड़े करीने से ट्रे में चाय बिस्किट लेकर बहादुर फिर हाजिर हुआ। ललाई लिए गोरा रंग, घुंघराले बाल, ठिगने कद का था बहादुर दिन भर दौड़ता-भागता रहता। दौड़ लगाता, भारी - भारी थैली दोनों कंधे पर टांगे उसी गति से ऊपर भी चढ़ जाता। वह विस्मय से देखा करती उसके बच्चे तो इतना सामान लेकर पहाड़ी कभी नहीं चल पाए। वह खुद भी जब नीचे उतरती तो वापसी में सांस फूल जाती थी। वह तो बीमार है। पर विवेक भी रुक रुक कर रास्ता तय कर पाते। बहादुर इन लोगों का खास ध्यान रखता। विवेक तो अक्सर कैमरा लेकर नीचे उतर जाते। पर लीला नहीं चल पाती तो टेरिस पर बैठे-बैठे नैसर्गिक आनंद का अनुभव किया करती। थक जाती तो कमरे में आ कर लेट जाती। बहादुर

मौका मिलते ही कमरे में आ जाता बड़ी ही आत्मीयता से पूछता, मेम शाब, तबीयत ठीक नहीं है शायद, कुछ चाहिए तो बतला दें। लीला भी अपनापन देख अभिभूत हो उठती। दो-तीन दिन में ही अपरिचय की दीवाल ढह गई। पूछने पर अपने विषय में बतलाया पास के गांव का रहने वाला है। घर में मां, दो छोटी बहनें हैं। पिता का साया बचपन में ही उठ गया था। वह 10 साल की उम्र से होटल पर नौकरी कर रहा है। मां भी गांव में छोटा मोटा काम करके चार पैसे कमाती है। वह बड़ा है तो जिम्मेदारी भी तो उसकी बनती है। मालिक उस पर बहुत भरोसा करते हैं। वह कभी हिसाब नहीं पूछते पर वह एक एक पैसे का हिसाब देता है। जब सर्दी में टूरिस्ट कम आते है, तो गाँव जाने को मिलता है। नहीं तो 15 दिन में माँ आकर मिल जाती है जो पैसे कमाता है माँ को खर्चे के लिए दे देता है। अपना तो खर्चा ही क्या है मैम साहब पेट भर रोटी मालिक खिला ही देता है बस। कहकर बहादुर हंस पड़ा था।छोटे बच्चे के मुँह से जिम्मेदारी की बड़ी-बड़ी बातें सुन लीला अवाक रह गई थी। एक दिन फिर पूछा था, अच्छा बहादुर स्कूल नहीं जाता, क्या और बच्चों को देखने का मन नहीं होता होता। क्यों नहीं मैम साहब पर पढ़ने का टाइम कहाँ है, हमारे यहां बहुत बड़ा स्कूल है। बाहर से बहुत सारे बच्चे पढ़ने आते हैं। उनकी टाई ड्रेस देख मेरा भी मन करता पर पैसा कहाँ है, वह बच्चे बहुत बड़े घरों के होंगे, उनके मां-बाप के पास खूब पैसा होगा अपनी तकदीर नहीं है, मेम शाब। पर पढ़ा नहीं तो क्या रुपया पैसा सब पहचानता है। कोई धोखा नहीं दे सकता लीला का मन भर आया था। समझाते हुए बोली थी, अच्छा सुन एक काम हो सकता है किताबे तुझे हमला कर दे देंगे रात को किसी से पढ़ लिया करना। अरे नहीं मेम शाब बिना पैसा कौन पढ़ाएगा। अचानक ना जाने क्या सूझा, कहने लगी, अच्छा चल अब लोगों के साथ चल, वहां हमारे साथ रहना तुझे जितना मन करें पढ़ना। दिन में बस थोड़ा बहुत काम करना। मैं खुद तुझे पढ़ाऊंगी। बालक मन ठहरा पहले तो दलीलें देता रहा श्री लीला के सब्जबाग दिखाने पर मन ही मन गंभीरता से सोचने लगा। बाहर निकलकर मेरे साथ साथ बहनों की जिंदगी बन जाएगी। यहाँ रहा तो बस होटल में ही चाकरी करता रहूंगा। अब तो यह रोज की बात हो गई माँ का मोह पीछे खींचता था, पर भविष्य के सपने आगे धकेलते थे।लीला मन ही मन को खुश हो रही थी कि चलो घूमने के साथ-साथ एक और उपलब्धि हो गई। घर के कामकाज के लिए एक ईमानदार लड़का मिल गया। उत्साह से भर कर अपने घर बच्चों के विषय में बात कर दोनों मिलकर भविष्य के सपने देखा करती। एक के सपनों में सुंदर भविष्य था तो दूसरे के सपनों में घर के काम को लेकर आश्वस्त का भाव। धीरे-धीरे जाने के आने लगे। अब लीला तन से ही नहीं मन से भी अच्छा अनुभव कर रही थी। विवेक देखते तो खुश होते। चलो आना सार्थक हो गया। उनके पीठ पीछे क्या खिचड़ी पक रही है तनिक भी अनुमान नहीं था। लीला निश्चिंत थी कि भला विवेक को क्या आपत्ति हो सकती है। दोनों के बीच एक स्नेह का तंत्र विकसित हो गया था। वापसी का दिन भी आ गया। सुबह से बहादुर का कोई पता नहीं था। मन ही मन लीला को बुरा लग रहा था। नहीं चलना था तो मना ही कर देता। पर छिपने की क्या जरूरत थी। इतने दिन से हम लोगों का ख्याल रखा था। चलते समय बक्शीश में कुछ रुपए ही दे देती। मैनेजर से पूछा तो पता चला कि माँ से मिलने गांव गया है। शाम तक वापस आएगा। टैक्सी होटल के दरवाजे पर आ गई। सामान रखा जा चुका था। वह पीछे मुड़ मुड़कर अब भी उम्मीद से बार-बार देख रही थी कि शायद अब भी बहादुर आ जाए। हृदय कहता था कि वह चलने से पहले जरूर आ जाएगा, पर बुद्धि सहमत नहीं थी। जब उसे पता था कि आज ही जाना है तो वह गांव गया ही क्यों। निराश हो गए टैक्सी में बैठने ही जा रही थी कि दूर से बहादुर दौड़ता आता दिखा। कंधे पर छोटा सा बैठा था। पीछे पीछे माँ भी लगभग दौड़ती चली आ रही थी। आते ही बोला मैम शाब मेरी माँ आपके साथ भेजने को राजी हो गई है। वह भी चाहती है कि मैं पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बन जाऊं। आप एक कागज पर अपने शहर का पता लिख दे। मेरी मां किसी से चिट्ठी लिखवा दिया करेगी। यह देखो साथ में रास्ते के लिए रोटी और अचार भी बांधा है।

बहादुर का उत्साह चरम पर था। पर लीला स्तब्ध खड़ी थी। माजरा समझते ही विवेक का पारा चढ़ गया, तुम इसे कैसे साथ ले जा सकती हो। एक बार मुझसे पूछने की जरूरत भी महसूस नहीं की। क्या जानती नहीं बाल श्रम बड़ा अपराध है और फिर तुम इसके बारे में कितना जानती हो किसी पर भी विश्वास करना इतना आसान है। क्या हद है मूर्खता की विवेक पैर पटकते टैक्सी में जा बैठे थे और लीला एक अपराधी की तरह बहादुर उसकी मां के सामने खड़ी थी। बहादुर से आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। इतने दिनों से उसकी आंखों में जो सपने सजा रही थी उन्हीं आंखों में आंसू देखने का साहस कहां से लाए। शर्मिंदगी से भरकर पर्स खोलकर का 50 का नोट निकालकर बहादुर की ओर बढ़ाया और उसने सिर झुका का हाथ जोड़े और बिना लिए थके कदमों से चला गया। पूरे रास्ते विवेक का भाषण जारी रहा और उसे लगता रहा बहादुर की आंसू भरी आंखें अभी उसका पीछा कर रही है। और बार-बार यही पूछ रही है कि एक मासूम का हृदय तोड़ने का उसे क्या हक़ था। अब तो जवान हो गया होगा। पर क्या वे इस घटना को कभी भूल पाया होगा। शायद नहीं, क्योंकि वह आज

तक कब भुला पाई है।

उस दिन शाम को बहुत दिनों बाद बाजार जाना हुआ। बाजार की भीड़ भाड़ से बड़ी घबराहट होती है। पर दीपावली का त्यौहार नजदीक था, तो तय किया कि बाजार में भीड़ बड़े उससे पहले ही कुछ जरूरी खरीदारी कर दी जाए। कार पार्किंग से बाजार की ओर बढ़ी रहे थे कि सामने से एक युवके से चलता आया। पास आते ही लपक कर उसने लीला और विवेक के पैर छू लिए। वे दोनों अचकचा कर पीछे हट गए। सामने खड़े युवक को पहचानने की असफल कोशिश करने लगे। उसकी दुविधा में देख वह युवक बोल पड़ा, आप लोग शायद मुझे नहीं पहचान पाए मैं बहादुर हूँ। कौन बहादुर ? विवेक ने प्रश्न किया। जी नैनीताल वाला, जिस होटल में आप ठहरे थे, मैं वही काम करता था। अब लीला पहचान गई थी, तुरंत उसके चेहरे पर पश्चाताप के भाव उभर आए। पर तुम यहां कैसे, विवेक ने प्रश्न पूछा। सब आपकी कृपा है। मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगा। उस दिन जब आप लोग मुझे छोड़ कर चले गए तो पहले तो मैं खूब रोया। मेरे आँसुओ ने मुझे ताकत दी। मैंने उसी समय तय कर लिया कि अब जैसे भी हो मुझे पढ़ना होगा। आपने मेरे भीतर जो पढ़ाई की लौ लगाई थी। मैंने उसे बुझने नहीं दिया। दिन में काम करता। रात को खूब मेहनत से पड़ता। एक मास्टर जी की दया मिल गई। पुरानी किताबों का जुगाड़ कर देते धीरे-धीरे मेहनत रंग लाई। रास्ते पर चलता गया मंजिल खुद ब खुद पास आती गई और एक दिन मेरे हाथों में इंजीनियरिंग की डिग्री आ गई। उस दिन मैंने भगवान के साथ-साथ आपको भी धन्यवाद दिया। आपका पता मेरे पास नहीं था। पर भगवान से जरूर दुआ करता था कि एक बार आपसे मिला दे। आज मेरी दुआ कबूल भी हो गई। अब मैं यहां एक बड़ी कंपनी कंपनी में काम करता हूँ। आज जो भी हूँ, आपकी वजह से हूँ। आपने मुझे सपने दिखलाएं, मैंने उन्हें जीवन में बस उतार लिया, कहते-कहते बहादुर भावुक हो गया। लीला ने हाथ बढ़ाकर उसे अपने सीने से लगा लिया। उसकी आंखों में भी आंसू बह निकले और इन आंसुओं में बरसों का पश्चाताप बाहर निकला। विवेक स्तब्ध खड़े इस मिलन के साक्षी थे।

नव वर्ष

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी

आया नववर्ष करें अभिनन्दन
नवल रश्मिया अम्बर में
अर्चना कर रही अंजुल से
नव विहान ले सूरज निकला
मानव के संतृप्त जीवन में

आया नववर्ष करें अभिनंदन
माता पिता गुरु का हो वन्दन
नव संकल्प हो जीवन में
नव किसलय और नव पियूष
खिलते रहे सदा दुखी मन में

आया नव वर्ष करें अभिनंदन

बेटियो को दे शिक्षा ,समुचित
घर परिवार कभी न विखरें
करे सदा दुखियों की सेवा
और करे भगवान का वन्दन

आया नववर्ष करें अभिनन्दन
सुखी और समृद्ध रहे जन
कोई साथी बिछड़ ना जाए
हम सब मिलकर ढोक लगाएं
ईश्वर आगे शीश झुकाये
आओ करें नववर्ष अभिनंदन

-0-

नए वर्ष की अभिलाषा

- राघव चतुर्वेदी, फरीदाबाद

नए वर्ष की नयी सुबह जब सूरज ने देखा संसार।
चमक उठे चेहरे सारे और हुआ ऊर्जा का संचार।।
उतर गयी ठिठुरन सर्दी की सूर्य देव का है उपकार।
लेकर नयी ऊर्जा हम सब, करें सभी सपने साकार।।
नया वर्ष भारत का शुभ हो, नयी मंज़लिें लें आकार।
सीमायें हों सभी सुरक्षित, और नया कुछ हो विस्तार।।
दुनिया में पहचान हो अपनी,हमको माने सब संसार।
अखिल विश्व सिरमौर बनें हम,खूब बढे अपना व्यापार।।
सोने की चिड़यिा थे हम, और इतना स्वर्ण थे अपने द्वार।
आज वही युग वापस लाएं करें स्वर्ण मन और विचार।।
यदि हम इतना कर पाएं तो स्वर्णिम होगा यह संसार।
विश्व गुरु फिर भारत होगा, शीश झुकायेगा संसार।।
नया वर्ष है स्वर्णिम अवसर, है सुस्ती में यह संसार।
दें परिचय अपनी प्रतिभा का, चलो पकड़ लें हम रफ्तार।।

पाज़ीटिव सोच

- श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी, (होलीपुरा/दिल्ली)

क्या आपने कभी सोचा किः-

वर्ष 2020 ने हमें क्या दिया ??

शायद आप बोलें.....

कोरोना, चक्रवात, व्यवसाय - नौकरी में नुकसान, मानसिक तनाव, डर दहशत, आत्महत्या की इच्छा, चीन, पाकिस्तान के साथ युद्ध जैसी स्थिति, आदि आदि।

लेकिन नहीं... आप गलत सोच रहे हो मित्रों.....

* सच में देखा जाए तो 2020 ने हमें संघर्ष करना सिखाया है।
* परिवार की अहमियत व सहयोग
* देश व घर में स्वच्छता,सफाई की आवश्यकता, ये सिखाया

* सा व धा नी बरतना।
* एकदूसरे की मदद करना
* प्रकृति को सहेजना
* अन्न की कीमत
* मा न सि क संतुलन
* यह बताया कि बिना आडम्बर व दिखावे के मांगलिक कार्यों (विवाह आदि) में मितव्ययीता के साथ और स्वजनों का सादगी पूर्ण अंतिम संस्कार हो सकता है।
* घर में रहने के लिए आवश्यक संयम दिया।
* घर के काम में हाथ बंटाना व सहयोग सिखाया।
* भविष्य में आने वाली किसी भी बड़ी विपदा से निपटने की मानसिक तैयारी करायी।
* अमीरी-गरीबी, अपने-पराये का भेद मिटाया
* अब तक हम जिन्हें अपने पूजा स्थलों पर देखते थे। उस परम शक्ति ईश्वर का घर घर दर्शन कराया है।
* आध्यात्मिक चिंतन करना सिखाया
* जीवन का असली मूल्य समझाया।

सही मायनों में हमारे जीवन में, सोच में, व्यवहार में, चिंतन में बदलाव लाया है वर्ष 2020।

जीवन

- श्रीमती अंजू भरत चतुर्वेदी, रिषड़ा

छोटा सा जीवन है,लगभग 80 वर्ष। उसमें से आधा 40 वर्ष तो रात को बीत जाता है। उसका आधा 20 वर्ष बचपन और बुढ़ापे मे बीत जाता है। अब बचा 20 वर्ष। उसमें भी कभी योग, कभी वियोग, कभी पढ़ाई, कभी परीक्षा, नौकरी, व्यापार और अनेक चिन्ताएँ व्यक्ति को घेरे रखती हैं।अब बचा ही कितना? यदि हम थोड़ी सी सम्पत्ति के लिए झगड़ा करें और फिर भी सारी सम्पत्ति यहीं छोड़ जाएँ, तो इतना मूल्यवान मनुष्य जीवन प्राप्त करने का क्या लाभ हुआ?

स्वयं विचार कीजिये :- इतना कुछ होते हुए भी

1- शब्दकोश में असंख्य शब्द होते हुए भी मौन होना सब से बेहतर है।

2- दुनिया में हजारों रंग होते हुए भी सफेद रंग सब से बेहतर है।

3- खाने के लिए दुनिया भर की चीजें होते हुए भी उपवास शरीर के लिए सबसे बेहतर है।

4- देखने के लिए इतना कुछ होते हुए भी बंद आँखों से भीतर देखना सबसे बेहतर है।

5- सलाह देने वाले लोगों के होते हुए भी अपनी आत्मा की आवाज सुनना सबसे बेहतर है।

6- जीवन में हजारों प्रलोभन होते हुए भी सिद्धांतों पर जीना सबसे बेहतर है।

* इंसान के अंदर जो समा जायें वह स्वाभिमान और जो इंसान के बाहर छलक जायें वो अभिमान

* जब भी बड़ो के साथ बैठो तो परमेश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि कुछ लोग इन लम्हों को तरसते हैं।

* जब भी अपने काम पर जाओ तो परमेश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि बहुत से लोग बेरोजगार हैं।

* परमेश्वर का धन्यवाद कहो जब तुम सेहतमंद हो, क्योंकि बीमार किसी भी कीमत पर सेहत खरीदने की ख्वाहिश रखते हैं।

* परमेश्वर का धन्यवाद कहो कि तुम जिन्दा हो, क्योंकि मरते हुए लोगों से पूछो

जिंदगी की कीमत क्या है।

ठंडे दिमाग व शांत वातावरण में एक बार मंथन अवश्य करें।

श्री सत्यनारायण व्रत कथा : विशेष

- पं0 त्रिलोकी नाथ (होलीपुरा/कोलकाता)

आमतौर पर देखा जाता है किसी भी शुभ काम से पहले या मनोकामनाएं पूरी होने पर सत्यनारायण व्रत की कथा सुनी जाती है। सनातन धर्म से जुड़ा शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसने श्रीसत्यनारायण कथा का नाम न सुना हो। इस कथा को सुनने का फल हजारों सालों तक किए गये यज्ञ के बराबर माना जाता है। शास्त्रों के मुताबिक ऐसा माना गया है कि इस कथा को सुनने वाला व्यक्ति अगर व्रत रखता है तो उसके जीवन के दुखों को श्री हरि विष्णु खुद ही हर लेते हैं। स्कन्द पुराण के मुताबिक भगवान सत्यनारायण श्री हरि विष्णु का ही दूसरा रूप हैं। इस कथा की महिमा को भगवान सत्यनारायण ने अपने मुख से देवर्षि नारद को बताया है। पूर्णिमा के दिन इस कथा को सुनने का विशेष महत्व है। कलयुग में इस व्रत कथा को सुनना बहुत प्रभावशाली माना गया है।

जो लोग पूर्णिमा के दिन कथा नहीं सुन पाते हैं, वे कम से कम भगवान सत्यनारायण का मन में ध्यान कर लें। विशेष लाभ होगा। पुराणों में ऐसा भी बताया गया है कि जिस स्थान पर भी श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा होती है, वहां गौरी-गणेश, नवग्रह और समस्त दिक्पाल आ जाते हैं। केले के पेड़ के नीचे अथवा घर के ब्रह्म स्थान पर पूजा करना उत्तम फल देता है। भोग में पंजीरी, पंचामृत, केला और तुलसी दल विशेष रूप से शामिल करें।

सिर्फ पूर्णिमा को ही नहीं परिस्थितियों के मुताबिक किसी भी दिन कथा सुनी जा सकती है, बृहस्पतिवार को कथा सुनना विशेष लाभकारी होता है, भगवान तो बस भाव के भूखे हैं। मन में उनके प्रति अगर सच्चा प्रेम है तो कोई भी दिन हो प्रभु की कृपा बरसती रहेगी। इस कथा के प्रभाव से खुशहाल जीवन, दाम्पत्य सुख, मनचाहे वर-वधु, संतान, स्वास्थ्य जैसी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। अगर पैसों से जुड़ी कोई समस्या है तो ये कथा किसी संजीवनी से कम नहीं है। तो जब भी मौका मिले भगवान की कथा सुने और सुनाएं।

श्री सत्यनारायण कथा का सन्दर्भ : पुराकालमें शौनकादिऋषि नैमिषारण्य स्थित महर्षि सूत जी के आश्रम पर पहुंचे। ऋषिगण महर्षि सूत जीसे प्रश्न करते हैं कि लौकिक कष्टमुक्ति, सांसारिक सुख समृद्धि एवं पारलौकिक लक्ष्य की सिद्धि के लिए सरल उपाय क्या है? महर्षि सूतजी शौनकादिऋषियों को बताते हैं कि ऐसा ही प्रश्न नारद जी ने भगवान विष्णु से किया था। भगवान विष्णु ने नारद जी को

बताया कि लौकिक क्लेशमुक्ति, सांसारिक सुखसमृद्धि एवं पारलौकिक लक्ष्य सिद्धि के लिए एक ही राजमार्ग है, वह है सत्यनारायण व्रत। सत्यनारायण का अर्थ है सत्याचरण, सत्याग्रह, सत्यनिष्ठा। संसार में सुखसमृद्धि की प्राप्ति सत्याचरणद्वारा ही संभव है। सत्य ही ईश्वर है। सत्याचरणका अर्थ है ईश्वराराधन, भगवत्पूजा।

सत्यनारायण व्रत कथा के पात्र दो कोटि में आते हैं, निष्ठावान सत्यव्रती एवं स्वार्थबद्ध सत्यव्रती। शतानन्द, काष्ठ-विक्रेता भील एवं राजा उल्कामुखनिष्ठावान सत्यव्रती थे। इन पात्रों ने सत्याचरण एवं सत्यनारायण भगवान की पूजार्चाकरके लौकिक एवं पारलौकिक सुखोंकी प्राप्ति की। शतानन्दअति दीन ब्राह्मण थे। भिक्षावृत्ति अपनाकर वे अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। अपनी तीव्र सत्यनिष्ठा के कारण उन्होंने सत्याचरणका व्रत लिया। भगवान सत्यनारायण की विधिवत् पूजा अर्चना की। वेइहलोक के सुखं भुक्त्वाचान्तं सत्य पुरंययौ (इस लोक में सुखभोग एवं अन्त में सत्यपुरमें प्रवेश) की स्थिति में आए। काष्ठ-विक्रेता भील भी अति निर्धन था। किसी तरह लकडी बेचकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। उसने भी सम्पूर्ण निष्ठा के साथ सत्याचरणकिया; सत्यनारायण भगवान की पूजार्चाकी। राजा उल्कामुखभी निष्ठावान सत्यव्रतीथे। वे नियमित रूप से भद्रशीला नदी के किनारे सपत्नीक सत्यनारायण भगवान की पूजार्चाकरते थे। सत्याचरणही उनके जीवन का मूलमन्त्र था। दूसरी तरफ साधु वणिक एवं राजा तुंगध्वज स्वार्थबद्धकोटि के सत्यव्रतीथे। स्वार्थ साधन हेतु बाध्य होकर इन दोनों पात्रों ने सत्याचरणकिया ; सत्यनारायण भगवान की पूजार्चाकी। साधु वणिक की सत्यनारायण भगवान में निष्ठा नहीं थी। सत्यनारायण पूजार्चाका संकल्प लेने के उपरान्त उसके परिवार

में कलावती नामक कन्या-रत्न का जन्म हुआ। कन्याजन्मके पश्चात उसने अपने संकल्प को भुला दिया और सत्यनारायण भगवान की पूजार्चानहीं की। उसने पूजा कन्या के विवाह तक के लिए टाल दी। कन्या के विवाह-अवसर पर भी उसने सत्याचरण एवं पूजार्चा से मुंह मोड लिया और दामाद के साथ व्यापार-यात्रा पर चल पडा। दैवयोग से रत्नसारपुर में श्वसुर-दामाद के ऊपर चोरी का आरोप लगा। यहां उन्हें राजा चंद्रकेतुके कारागार में रहना पडा। श्वसुर और दामाद कारागार से मुक्त हुए तो श्वसुर (साधु वाणिक) ने एक दण्डीस्वामी से झूठ बोल दिया कि उसकी नौका में रत्नादि नहीं, मात्र लता-पत्र है। इस मिथ्यावादनके कारण उसे संपत्ति-विनाश का कष्ट भोगना पडा। अन्ततःबाध्य होकर उसने सत्यनारायण भगवान का व्रत किया। साधु वाणिकके मिथ्याचार के कारण उसके घर पर भी भयंकर चोरी हो गई। पत्नी-पुत्र दाने-दाने को मुहताज। इसी बीच उन्हें साधु वाणिकके सकुशल घर लौटने की सूचना मिली। उस समय कलावतीअपनी माता लीलावती के साथ सत्यनारायण भगवान की पूजार्चा कर रही थी। समाचार सुनते ही कलावतीअपने पिता और पति से मिलने के लिए दौडी। इसी हडबडी में वह भगवान का प्रसाद ग्रहण करना भूल गई। प्रसाद न ग्रहण करने के कारण साधु वाणिकऔर उसके दामाद नाव सहित समुद्र में डूब गए। फिर अचानक कलावती को अपनी भूल की याद आई। वह दौडी-दौडी घर आई और भगवान का प्रसाद लिया। इसके बाद सब कुछ ठीक हो गया। लगभग यही स्थिति राजा तुंगध्वजकी भी थी। एक स्थान पर गोपबन्धु भगवान सत्यनारायण की पूजा कर रहे थे। राजसत्तामदां धतुंगध्वज न तो पूजास्थल पर गए और न ही गोपबंधुओं द्वारा प्रदत्त भगवान का प्रसाद ग्रहण किया। इसीलिए उन्हें कष्ट भोगना पडा। अंततःबाध्य होकर उन्होंने सत्यनारायण भगवान की पूजार्चाकी और सत्याचरणका व्रत लिया। सत्यनारायण व्रतकथाके उपर्युक्त पांचों पात्र मात्र कथापात्रही नहीं, वे मानव मन की दो प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। ये प्रवृत्तियां हैं, सत्याग्रह एवं मिथ्याग्रह। लोक में सर्वदाइन दोनों प्रवृत्तियों के धारक रहते हैं। इन पात्रों के माध्यम से स्कंदपुराण यह संदेश देना चाहता है कि निर्धन एवं सत्ताहीन व्यक्ति भी सत्याग्रही, सत्यव्रती, सत्यनिष्ठ हो सकता है और धन तथा सत्तासंपन्नव्यक्ति मिथ्याग्रही हो सकता है। शतानन्दऔर काष्ठ-विक्रेता भील निर्धन और सत्ताहीनथे। फिर भी इनमें तीव्र सत्याग्रह वृत्तिथी। इसके विपरीत साधु वाणिक एवं राजा तुंगध्वजधनसम्पन्न एवं सत्तासम्पन्न थे। पर उनकी वृत्ति मिथ्याग्रहीथी। सत्ता एवं धनसम्पन्न व्यक्ति में सत्याग्रह हो, ऐसी घटना विरल होती है। सत्यनारायण व्रतकथाके पात्र राजा उल्कामुख ऐसी ही विरल कोटि के व्यक्ति थे। पूरी सत्यनारायण व्रतकथाका निहितार्थ यह है कि लौकिक एवं परलौकिक हितों की साधना के लिए मनुष्य को सत्याचरणका व्रत लेना चाहिए। सत्य ही भगवान है। सत्य ही विष्णु है। लोक में सारी बुराइयों, सारे क्लेशों, सारे संघर्षो का मूल कारण है सत्याचरणका अभाव। सत्यनारायण व्रत कथा पुस्तिका में इस संबंध में श्लोक इस प्रकार है :--

यत्कृत्वासर्वदुःखेभ्योमुक्तोभवतिमानवः।
विशेषतः कलियुगेसत्यपूजाफलप्रदा।
केचित् कालंवदिष्यन्तिसत्यमीशंतमेवच।
सत्यनारायणंकेचित् सत्यदेवंतथाऽपरे।
नाना रूपधरोभूत्वासर्वेषामीप्सितप्रदः।
भविष्यतिकलौविष्णुः सत्यरूपीसनातनः।

अर्थात सत्यनारायण व्रत का अनुष्ठान करके मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त हो जाता है। कलिकाल में सत्य की पूजा विशेष रूप से फलदायीहोती है। सत्य के अनेक नाम हैं, यथा-सत्यनारायण, सत्यदेव। सनातन सत्यरूपीविष्णु भगवान कलियुग में अनेक रूप धारण करके लोगों को मनोवांछित फल देंगे।

पूजा के पूर्व की तैयारी : जिस दिन पूजा करनी हो एक या दो दिन पूर्व ही यतन अनुसार पूजा की सभी सामग्री बाजार से ला कर उसे चेक कर ले ताकि पूजा के समय असुविधा न हो।

पूजन विधि : श्री सत्यनारायण का पूजन महीने में एक बार पूर्णिमा या संक्रांति को या किसी भी दिन या समयानुसार किया जा सकता है। सत्यनारायण का पूजन जीवन में सत्य के महत्व को बतलाता है। इस दिन स्नान करके कोरे अथवा धुले हुए शुद्ध वस्त्र पहनें। माथे पर तिलक लगाएं। अब भगवान गणेश का नाम लेकर पूजन शुरु करें।

पूजन का मंडप तैयार करना : पूर्वाभिमुख हो कर एक चोकी पर पीला कपडा बिछा कर केले के खम्बे को लगा दे उस के बाद चित्रानुसार भगवन श्री सत्यनाराण, गणेश,नवग्रह,कलश,षोडश मातृकाएँ,वास्तुदेवता की स्थापना करें अष्टदल या स्वस्तिक बनाएं। बीच में चावल रखें। पान सुपारी के साथ भगवान सत्यनारायण की तस्वीर रखें। सत्यनारायण के दाहिनी ओर शंख की स्थापना करें। जल से भरा एक कलश भी दाहिनी ओर रखें। कलश पर शक्कर या चावल से भरी कटोरी रखें। कटोरी पर नारियल भी रखा जा सकता है। अब बायी ओर दीपक रखें। केले के पत्तों से पाटे के दोनो ओर सजावट करें।

अब पाटे के आगे एक सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर नौ जगह चावल की ढेरी रखें तथा नवग्रह मंडल बनाएं पूजन के समय इनमें नवग्रहों का पूजन किया जाना है। और उस के साथ ही गेहूँ की सोलह ढेरी रखें तथा षोडशमातृका मंडल तैयार

करने के बाद पूजन शुरु करें। प्रसाद के लिए पंचामृत, गेहूं के आटे को सेंककर तैयार की गई पंजीरी या शक्कर का बूरा, फल, नारियल इन सबको सवाया मात्रा में इकठ्ठा कर लें। या जितना शक्ति हो उस अनुसार इकठ्ठा कर लें। भगवान की तस्वीर के आगे ये सभी पदार्थ रख दें।

सकंल्प : संकल्प करने से पहले हाथों मे जल, फूल व चावल लें। सकंल्प में जिस दिन पूजन कर रहे हैं उस वर्ष, उस वार, तिथि उस जगह और अपने नाम को लेकर अपनी इच्छा बोले। अब हाथों में लिए गए जल को जमीन पर छोड़ दें।

पवित्रकरण : बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अनामिका से निम्न मंत्र बोलते हुए अपने ऊपर एवं पूजन सामग्री पर जल छिड़कें-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः।।
पुनः पुण्डरीकाक्षं, पुनः पुण्डरीकाक्षं, पुनः पुण्डरीकाक्षं।

आसन शुद्धि : निम्न मंत्र से अपने आसन पर उपरोक्त तरह से जल छिड़कें-

पृथ्वी त्वया घता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम।

ग्रंथि बंधन : यदि यजमान या पूजा करने वाले भक्त सपत्नीक बैठ रहे हों तो निम्न मंत्र के पाठ से ग्रंथि बंधन या गठजोड़ा करें-

यदाबध्नन दाक्षायणा हिरण्य(गुं) शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बन्धामि शत शारदायायुष्यंजरदष्टियर्थासम

आचमन करें : इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करें व तीन बार कहें-

ऊँ केशवाय नमः
ऊँ नारायणाय नमः
ऊँ माधवाय नमः
यह मंत्र बोलकर हाथ धोएं
ऊँ गोविन्दाय नमः हस्तं प्रक्षालयामि।

स्वस्तिवाचन मंत्र : सबसे पहले स्वस्तिवाचन किया जाना चाहिए।

स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।
द्यौः शांतिः अंतरिक्षगुं शांतिः पृथिवी शांतिरापः
शांतिरोषधयः शांतिः। वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः
शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्वगुं शांतिः शांतिरेव शांति सा
मा शांतिरेधि। यतो यतः समिहसे ततो नो अभयं कुरु।
शंन्नः कुरु प्राजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः। सुशांतिर्भवतु।
अब सभी देवी-देवताओं को प्रणाम करें-
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
उमा महेश्वराभ्यां नमः।
वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।
शचीपुरन्दराभ्यां नमः।
मातृ-पितृचरणकमलेभ्यो नमः।
इष्टदेवताभ्यो नमः।
कुलदेवताभ्यो नमः।
ग्रामदेवताभ्यो नमः।
वास्तुदेवताभ्यो नमः।
स्थानदेवताभ्यो नमः।
सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः।
सर्वेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो नमः।
सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्यहा गणाधिपतये नमः।

भगवान गणेश को स्नान कराएं। वस्त्र अर्पित करें। जनेऊ अर्पित करें। गंध, पुष्प, अक्षत अर्पित करें। भगवान नारायण को स्नान कराएं। जनेऊ अर्पित करें। गधं, पुष्प,अक्षत अर्पित करें। अब दीपक प्रज्वलित करें। धूप, दीप करें। भगवान गणेश और सत्यनारायण धूप-दीप अर्पित करें। ''ऊँ सत्यनारायण नमः'' कहते हुए सत्यनारायण का पूजन करें।

अब चावल की ढेरी में नवग्रहों का पूजन करें। अष्टगंध, पुष्प को नवग्रहों को अर्पित करें।

नवग्रहों का पूजन का मंत्र : ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु।

इस मंत्र से नवग्रहों का पूजन करें।

अब कलश में वरुण देव का पूजन करें। दीपक में अग्नि देव का पूजन करें।

कलश पूजन : कलशस्य मुखे विष्णु कंठे रुद्र समाश्रिताः मूलेतस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मात्र गणा स्मृताः। कुक्षौतु सागरा सर्वे ससद्वीपा वसुंधरा, ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामगानां अथर्वणाः अडेश्च सहितासर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।

ऊँ अपां पतये वरुणाय नमः। इस मंत्र के साथ कलश में वरुण देवता का पूजन करें।

दीपक : दीपक प्रज्वलित करें एवं हाथ धोकर दीपक का पुष्प एवं कुंकु से पूजन करें-

भो दीप देवरुपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविन्धकृत।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात तावत्वं सुस्थिर भवः।

कथा-वाचन और आरतीः पूजन के बाद सत्यनारायण की कथा का पाठ करें अथवा सुनें। कथा पूरी होने पर भगवान की आरती करें। प्रदक्षिणा करें। अब नेवैद्य अर्पित करें। फल, मिठाई, शक्कर का बूरा जो भी पदार्थ सवाया इकठ्ठा करा हो। उन सभी पदार्थों का भगवान को भोग अर्पित करें। भगवान का प्रसाद सभी भक्तों को प्रेम भाव से वितरित किया जाए।

सुख दुख का सहोदर "मोबाइल"

- श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

जी हां मैं एक मोबाइल हूँ। आज हर हाथ पर मेरा कब्जा है। मैं छोटा, बड़ा, मोटा, पतला, सस्ता, महँगा सभी रंग और सभी आकार में मिलता हूँ। मेरी भी उप जाति हैं।4G, 5G, 3G है।

मैं वर्तमान दुनिया का अलादीन का चिराग हूँ। उंगली चलाते ही गूगल नाम का जिन उपस्थित हो जाता है। बोलो मेरे आका क्या हाजिर करुँ। आप रख दीजिए अपनी बात हर बात। जवाब हाजिर हो जाएगा। कोई टेंशन नहीं लेने का। सारी जानकारियां यह अलादीन का चिराग देता रहेगा और अधिक जानकारियां चाहिए तो ₹खुल जा सिम सिमर है वह आपको अवांछित जानकारियां दे देगी। मगर अपने नाबालिग बच्चों के सामने खुल जा सिम सिम मत खोल लेना, आगे आपके बच्चों के जीवन के लिए नुकसानदायक रहेंगी।

पहले मेरे एक और सहोदर भाई ने कंप्यूटर ने सारी दुनिया को एक कमरे में समेट कर रख दिया था एक छोटा सा माउस सारी दुनिया की जानकारी समेटकर आपके सामने प्रस्तुत कर देता था। अब मैं उसका बड़ा सहोदर हूँ। आप के साथ हमेशा उपलब्ध रहता हूँ दिन हो या रात, घर में हो या बाहर हरदम साथ रहता हूँ।

मेरा उपयोग यदि आपने अपनी पत्नी के सामने आवश्यकता से अधिक कर लिया तो समझ लो आपका झगड़ा होना निश्चित है। दिनभर इसी में घुसे रहते हो कभी घर गृहस्थी की खबर भी लिया करो। हाथ का कौर मुँह में रख लो, कब से लेकर बैठे हैं, बाद में बात कर लेना। जब इस दोस्त से फुर्सत मिल जाए तो हमसे बात कर लेना।

यह बातें आपको रोज सुननी पड़ती है। मगर इसके बाद भी आप मेरा उपयोग कम नहीं करते।

दुनिया में मेरा उपयोग 25 साल पहले होने लगा था। भारत कौन पीछे रहने वाला है। भारत में भी 20 साल पहले मैं आ गया। हां इतना जरूर है कि मेरे अत्यधिक प्रयोग और दुरुपयोग के मामले में हम भारतवासी सबसे आगे हैं।

जब भी अर्थव्यवस्था की बात आती हम शुरू से यही बात पढ़ते चले आ रहे हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 90 प्रतिशत जनता कृषि और कृषि पर आधारित उद्योग धंधों पर निर्भर है। अब एक बात और जोड़ दीजिए। भारत की 70 प्रतिशत जनता मोबाइल धारक है। मैं विभिन्न एपों के कारण उपयोगी सिद्ध हो रहा हूँ।

लॉकडाउन और कोरोना की महामारी के कारण आज भारत की नई पौध को मैं ही शिक्षित कर रहा हूँ। मेरे कारण ही वह शिक्षा से जुड़े हैं। यह अलग बात है कि कितना समझ पा रहे हैं या कितना लोग समझा पा रहे हैं।

इस ऑनलाइन पढ़ाई से सबसे ज्यादा किसी को कष्ट है तो मातृशक्ति को है। बच्चे मुझे छोड़ते नहीं है। बच्चों की पढ़ाई चल रही है मम्मी की चैटिंग रुक गई है। सखियों की खट्टी मीठी बातें बंद हो गई है। मगर वह भी मजबूर है। इस महंगाई के जमाने में कितना मुझे खरीदें। कुछ खुराफाती दिमाग वाले बच्चे ऑनलाइन के नाम पर बैठकर गेम खेलते हैं। मम्मी आधा घंटा और क्लास चलेगी। तभी मोबाइल दे पाऊँगा।

लॉकडाउन में जब दुनिया थम सी गई। समय रुक गया। उस समय में ही काम आया। मैंने आवश्यक कार्य रुकने नहीं दिए। धन्यवाद देने वालों ने धन्यवाद दिया। जिनके पास नहीं था, उन्होंने कोसा।

आपसे मैं एक बात पूछता हूँ। जब मैं नहीं था, तब आप दूर देश में बैठे अपने लोगों से आमने सामने बैठ कर बात कर पाते थे। ऑफिस की जरूरी मीटिंग हो पाती थी, हुआ ना मेरे कारण। आज गूगल मीटिंग है, जूम मीटिंग है, के सहारे ही सारे काम चल रहे हैं। मगर भाई थोड़ा सा मुझे भी विश्राम दिया करो। इसके दो लाभ होंगे मैं अपना भोजन ग्रहण कर लूंगा और आपकी आंखों को सुकून मिलेगा।

जहान में जो आया है वह सर्वगुण संपन्न हो कर नहीं आया। गुण और दोष दोनों होते हैं यदि सभी गुण हो जाएं हम ईश्वर बराबर हो जायेंगे। इसलिए खुशी खुशी में अपनी कमियां कबूल कर रहा हूँ। बिना मांगे सलाह देना सभ्यता और मर्यादा के विरुद्ध है। लेकिन नई पौध को दिशा देने के कारण अपनी मर्यादा छोड़ना पड़ रही है। दो बातों का ख्याल रखो

1) समय

2) सामग्री

मुझे कितने समय तक अपने साथ रखना है। इसका संतुलन बनाना पड़ेगा, क्योंकि अधिक समय तक साथ रखने से आपके शारीरिक क्षमता का क्षय होगा। कैंसर और ट्यूमर जैसी बीमारियां भी हो सकती हैं, ऐसा शोधकर्ताओं का कहना है। आंखें तो कमजोर होती हैं जगजाहिर।

दूसरा सामग्री

मेरी किस सामग्री का प्रयोग करना है बस उसी का प्रयोग कीजिए जो आपके लिए उपयोगी हो₹ खुल जा सिम सिम ₹ या अलादीन के चिराग को घिसकर जिन्न को मत बुलाना, हाजिर हूँ आका,क्या सेवा करूं। कुछ अवांछित बुराइयां मेरी छुपी ही रहने दो।

यदि मैं आपके हाथ में एक तलवार के रूप में हूँ, तो दूसरे हाथ में ढाल के रूप में। विवेक एवं संयम होना चाहिए।

कहीं मेरा दुरुपयोग किशोर वय के बच्चे बच्चियों और युवक–युवतियों को नुकसानदायक ना हो आग गर्मी देती है, लेकिन चूल्हे में हाथ डालोगे तो हाथ जलेगा ही फिर आग को दोष देना कहाँ तक उचित है।

एक नया चलन और आ गया अब लोगों को मुझे हाथ में रखना भी भारी पड़ने लगा क्योंकि सारे काम निकल रहे हैं तो अब कीमत कम हो रही है। पटक दिया जेब में

और कान में लगा लिया ईयर फोन , इससे जो खतरे हैं उनका दोष भी मेरे ऊपर मढ़ा जाता है। दोनों कान बन्द है, किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही मस्ती में गाना सुनते चले जा रहे हैं। पीछे से किसी गाड़ी ने ठोक दिया। शुरू हो गई मेरे ऊपर आरोपों की बौछार। मेरा प्रयोग करो, मेरे लाभ लो, मगर कहीं ना कहीं सावधानियां भी प्रयोग करो। अन्त में इतना ही कहता हूँ। जैसा हूँ, आपके हाथ में हूँ।

अति हर चीज की बुरी होती है।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप,अति का भला न बरसना, आज की भली न धूप।

बात यहीं समाप्त नहीं हुई है और नए ऐप लेकर साथ आपके सामने फिर आऊँगा।

आपके हरदम साथ आपका सुख दुख का साथी

आपका अपना मोबाइल।

चों रे लल्ला

संकलन - मनीष चतुर्वेदी, इटावा/लखनऊ

चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
लिसोड़े की सब्जी और फुलका तीन–चार ?
घी में तलो जिमीकन्द और संग में दार ?
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
अजमाइन की घुइयां सूखी या रसेदार
भिंडी की चटनी, छुंको रायतो धुआं बघार
सूखे आलू संग में उरद चना घी डार
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
बाजरे की पनपती, खट्टी कढ़ी पकौड़ादार
लुचईन के संग में आरू–टमाटर मिर्चदार
बेड़इन के संग बेछिले आलू धुआंधार
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
पूड़नि के संग मीठो कासीफल कौ साग
बथुआ कौ रायतो कचौड़ी आलू भरमार
हींग छुंकी अर्हेर संग चामर मिर्च अचार
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
मिर्च ते लाल खट्टो सन्नाटो, नुक्ती के लड्डू बजनदार
जो लडुआ हाथन ते फोरो, डोकरा कौ फोरो कपार
जे कच्ची अमिया की चटनी, खीचरी घी में तरमाल
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
आलू–मैथी, मैथी–गाजर, मटर को झोर
दही कौ तोड़, भरेमां मिर्ची कौ अचार
परामठे धीमी आंच पे देसी घी में हों तैयार
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?
दही में बूरे की भरमार, इमरती पे रबड़ी कूं मार
आम की ठंडी बनी सिकन्न, मलाईपूड़ी रसादार
इलायची ते सजे मालपूआ, कैसो लगौ बिचार ?
चों रे लल्ला खाबेगो टेंटी कौ अचार ?

समाज व संगठन

- शुभांग सौरभ चतुर्वेदी, लखनऊ

एक आदमी था, जो हमेशा अपने संगठन में सक्रिय रहता था, उसको सभी जानते थे,बड़ा मान सम्मान मिलता था; अचानक किसी कारणवश वह निष्क्रीय रहने लगा, मिलना - जुलना बंद कर दिया और संगठन से दूर हो गया। कुछ सप्ताह पश्चात एक बहुत ही ठंडी रात में उस संगठन के मुखिया ने उससे मिलने का फैसला किया। मुखिया उस आदमी के घर गया और पाया कि आदमी घर पर अकेला ही था। एक बोरसी में जलती हुई लकड़ियों की लौ के सामने बैठा आराम से आग ताप रहा था। उस आदमी ने आगंतुक मुखिया का बड़ी खामोशी से स्वागत किया। दोनों चुपचाप बैठे रहे। केवल आग की लपटों को ऊपर तक उठते हुए ही देखते रहे। कुछ देर के बाद मुखिया ने बिना कुछ बोले, उन अंगारों में से एक लकड़ी जिसमें लौ उठ रही थी (जल रही थी) उसे उठाकर किनारे पर रख दिया। और फिर से शांत बैठ गया।

मेजबान हर चीज़ पर ध्यान दे रहा था। लंबे समय से अकेला होने के कारण मन ही मन आनंदित भी हो रहा था कि वह आज अपने संगठन के मुखिया के साथ है। लेकिन उसने देखा कि अलग की हुई लकड़ी की आग की लौ धीरे धीरे कम हो रही है। कुछ देर में आग बिल्कुल बुझ गई। उसमें कोई ताप नहीं बचा। उस लकड़ी से आग की चमक जल्द ही बाहर निकल गई। कुछ समय पूर्व जो उस लकड़ी में उज्ज्वल प्रकाश था और आग की तपन थी वह अब एक काले और मृत टुकड़े से ज्यादा कुछ शेष न था। इस बीच दोनों मित्रों ने एक दूसरे का बहुत ही संक्षिप्त अभिवादन किया, कम से कम शब्द बोले। जाने से पहले मुखिया ने अलग की हुई बेकार लकड़ी को उठाया और फिर से आग के बीच में रख दिया। वह लकड़ी फिर से सुलग कर लौ बनकर जलने लगी और चारों ओर रोशनी तथा ताप बिखेरने लगी। जब आदमी, मुखिया को छोड़ने के लिए दरवाजे तक पहुंचा तो उसने मुखिया से कहा मेरे घर आकर मुलाकात करने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

आज आपने बिना कुछ बात किए ही एक सुंदर पाठ पढ़ाया है कि अकेले व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता, संगठन का साथ मिलने पर ही वह चमकता है और रोशनी बिखेरता है ; संगठन से अलग होते ही वह लकड़ी की भाँति बुझ जाता है।

संगठन के प्रति हमारी निष्ठा और समर्पण किसी व्यक्ति के लिए नहीं, उससे जुड़े विचार के प्रति होनी चाहिए। संगठनों के बिना मानव जीवन अधूरा है। अतः जहाँ भी रहें संगठित रहें।

निवेदन

नवीन परिपाटी के अनुरूप अब चतुर्वेदी चंद्रिका प्राप्त न होने की शिकायत अब ऑनलाइन महासभा की वेबसाइट www.chaturvedimahasabha.in पर दर्ज की जाएगी। पत्रिका के वितरण की शिकायत के यथाशीघ्र त्वरित निवारण हेतु समाज के समाजप्रेमी स्वयंसेवको से इस कार्य में सहयोग हेतु निवेदन किया गया।

उनकी त्वरित सहमति उनके निस्वार्थ समाजप्रेम को परिलक्षित करता है। प्रारंभ में ये प्रणाली कुछ बाँधवों के सहयोग से निम्न शहरों में आरंभ कर रहे है। जिनके नाम निम्नानुसार है : मुनीन्द्र नाथ जी (नोएडा), भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा/कोलकाता), दिलीप सिकंदरपुरिया जी (लखनऊ), आशुतोष जी (कानपुर), प्रदीप चतुर्वेदी,संजू (गाजियाबाद), करुणेश जी (ग्वालियर), अंशुमान जी (जयपुर), प्रदीप चतुर्वेदी,लालन (आगरा), अभयराज जी (गुरुग्राम)। इसके अलावा अन्य शहरों की सभाओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं से चर्चा की जा रही है। यथाशीघ्र ही इस व्यवस्था को नियमित करने का प्रयास किया जा रहा है। संपादक

कद्दू

श्रीमती आशा चतुर्वेदी, कासगंज

कुम्हड़ा या कद्दू एक स्थलीय, द्विबीजपत्री पौधा है जिसका तना लम्बा, कमजोर व हरे रंग का होता है। तने पर छोटे-छोटे रोयें होते हैं। यह अपने आकर्षों की सहायता से बढ़ता या चढ़ता है। इसकी पत्तियां हरी, चौड़ी और वृत्ताकार होती हैं। इसका फूल पीले रंग का सवृंत, नियमित तथा अपूर्ण घंटाकार होता। नर एवं मादा पुष्प अलग-अलग होते हैं। नर एवं मादा दोनों पुष्पों में पाँच जोड़े बाह्यदल एवं पाँच जोड़े पीले रंग के दलपत्र होते हैं।

कद्दू सुनते ही हंसी से आ जाती है। अकसर मोटे लोगों का मज़ाक उड़ाने के लिए और छोटे बच्चों को प्यार से हम कद्दू कह देते हैं। इसे काशीफल भी कहा जाता है। ज़्यादातर लोग इसे पसंद नहीं करते, ना ही ये कोई बहुत महँगी सब्ज़ी है। पर ये होता बहुत ही लाभकारी है। प्रकृति ने अपनी इस 'गोल-मटोल' देन में कई तरह के औषधीय गुण समेटे हैं। इसका सेवन स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इसमें 'पेट' से लेकर 'दिल' तक की कई बीमारियों के इलाज की क्षमता है।

हमारे यहाँ विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर कद्दू की सब्जी और हलवा आदि बनाना-खाना शुभ माना जाता है। उपवास के दिनों में फलाहार के रूप में भी इससे बने विशेष पकवानों का सेवन किया जाता है।

हमारे पूर्वजों ने भी कद्दू के इन औषधीय गुणों को बहुत पहले ही पहचान लिया था और यही कारण है कि हमारे देश में, खासतौर पर उत्तर भारत के खान-पान में, इसे विशेष महत्व दिया जाता है। भारत में कद्दू की कई प्रजातियां पाई जाती हैं। जिन्हें उनके आकार-प्रकार और गूदे के आधार पर मुख्य रूप से सीताफल, चपन कद्दू और विलायती कद्दू के वर्गों में बांटा जाता है।

आज घर में कद्दू पूरी बनेगी। मुँह में पानी आ रहा है। खैर पहले और जाने कद्दू कुम्हड़, कुष्माण्ड परिवार के बारे में।

कुम्हड़ा या कद्दू एक स्थलीय, द्विबीजपत्री पौधा है जिसका तना लम्बा, कमजोर व हरे रंग का होता है। तने पर छोटे-छोटे रोयें होते हैं। यह अपने आकर्षों की सहायता से बढ़ता या चढ़ता है। इसकी पत्तियां हरी, चौड़ी और वृत्ताकार होती हैं। इसका फूल पीले रंग का सवृंत, नियमित तथा अपूर्ण घंटाकार होता। नर एवं मादा पुष्प अलग-अलग होते हैं। नर एवं मादा दोनों पुष्पों में पाँच जोड़े बाह्यदल एवं पाँच जोड़े पीले रंग के

दलपत्र होते हैं। नर पुष्प में तीन पुंकेसर होते हैं जिनमें दो एक जोड़ा बनाकार एवं तीसरा स्वतंत्र रहता है। मादा पुष्प में तीन संयुक्त अंडप होते हैं जिसे युक्तांडप कहते हैं। इसका फल लंबा या गोलाकार होता है। फल के अन्दर काफी बीज पाये जाते हैं। फल का वजन 4 से 8 किलोग्राम तक हो सकता है। सबसे बड़ी प्रजाति मैक्सिमा का वजन 34 किलोग्राम से भी अधिक होता है। यह लगभग संपूर्ण विश्व में उगाया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, मेक्सिको, भारत एवं चीन इसके सबसे बड़े उत्पादक देश हैं। इस पौधे की आयु एक वर्ष होती है। एक कप पके हुए पंपकिन (245 ग्रा) में निम्न पोषक तत्व होते हैं-

कैलोरीः 49, फैटः 0.2 ग्राम, प्रोटीनः 2 ग्राम, कार्ब्सः 12 ग्राम, फाइबरः 3 ग्राम,

विटामिन Aः दैनिक जरूरत का 245%
विटामिन Cः दैनिक जरूरत का 19%
पोटेशियमः दैनिक जरूरत का 16%
कॉपरः दैनिक जरूरत का 11%
मैंगनीजः दैनिक जरूरत का 11%
विटामिन B2ः दैनिक जरूरत का 11%
विटामिन Eः दैनिक जरूरत का 10%
आयरनः दैनिक जरूरत का 8%

कद्दू खाने के फायदे

फाइबर से समृद्ध-कद्दू में फाइबर काफी अधिक होता है। एक कप पके कद्दू में 3 ग्राम फाइबर होता है जो आपकी दैनिक जरूरत का लगभग 11 प्रतिशत होता है। कद्दू के बीज में भी फाइबर अच्छी मात्रा में होता हैं। लगभग 28 ग्राम बीज में 1.1 ग्राम फाइबर होता है। आप उबले हुए, भुने हुए या बेक्ड कद्दू का सेवन कर सकते हैं। इसके अलावा, आप सूप, ब्रेड और पाई बनाने में भी कद्दू का उपयोग कर सकते हैं।

शरीर से टॉक्सिन्स को साफ करे

कद्दू का सेवन प्रभावी रूप से शरीर से टॉक्सिन्स को निकालने में मदद करता है और शरीर को डिटॉक्स करता है। यह किडनी और यूरिन सिस्ट्म के माध्यम से शरीर के कचरे को बाहर निकालने में मदद करता है। यह डिटॉक्सिफिकेशन शरीर के कई हेल्थ प्रॉब्लम्स को दूर करता है।

रिंकल्स को कम करें

त्वचा की समस्याएं जैसे एजिंग साइन का इलाज के लिए कद्दू का उपयोग किया जाता है, क्योंकि इसमें विटामिन सी और विचामिन ए जैसे पोषक तत्व होते हैं। यह बेहद हाइड्रेटिंग है जो त्वचा को नमीयुक्त और ग्लोइंग बनाए रखता है। कद्दू का रस पीना त्वचा की झुर्रियों को कम करने के लिए एक प्रभावी उपचार है।

इम्यूनिटी को बूस्ट करे

विटामिन सी से भरपूर होने के कारण कद्दू का रस शरीर की प्रतिरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है। इसमें ओमेगा-3 और बीटा कैरोटीन जैसे एंटी-इंफ्लेमेट्री पोषक तत्व होते हैं जो शरीर की प्रतिरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है।

बालों की ग्रोथ बढ़ाएं

कद्दू में पोटेशियम अच्छी मात्रा में होते है जो कि बालों के विकास में मदद करता है। साथ ही, इसमें मौजूद विटामिन ए स्कैल्प की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है। इस प्रकार, कद्दू का रस पीने से बालों के विकास और रिग्रोथ में मदद मिल सकती है।

ब्लड प्रेशर को रेगुलेट करे

केवल आपके टेस्ट बड्स के लिए ही नहीं, बल्कि आपके दिल के लिए भी कद्दू एक बेस्ट फ्रेंड है। कद्दू में मौजूद पोटेशियम और एंटीऑक्सीडेंट हृदय के अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं और हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या को कम करते हैं।

कैंसर के रिस्क को कम करे

विटामिन ए और सी, आयरन जैसे पोषक तत्वों का मैजिकल कॉम्बो होने से कद्दू को कैंसर सेल्स के खिलाफ एक प्राकृतिक कवच के रूप में माना जाता हैं। विशेष रूप से, कद्दू प्रोस्टेट, ब्रेस्ट और पेट के कैंसर के रिक्स को कम करने के लिए फायदेमंद हैं। कद्दू, मकई और बीन्स जैसे खाद्य पदार्थों में पाए जाने वाले एंटीऑक्सिडेंट का सेवन ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करता है, जो कैंसर के रिस्क का एक प्रमुख कारण है।

विभिन्न भाषाओं में संस्कृत-पीतकूष्माण्ड , काशीफल, ग्राम्या;

हिंदी - सीताफल लालकुमढ़ा, मीठाकूष्माण्ड , कोहड़ा, कुम्हड़, असमी-रंगा , उड़िया-कुम्डा, माई, कन्नड-कुम्बलाकाई,कोंकणी-दूद्दे, कश्मीरी-अल , तुम्बी , गुजराती-कोरोन, तमिल-परांगीकाजी , पुषिनी, तेलगु-गुम्मदी, बंगाली-सफूरीकोमरा, नेपाली-फर्सी, पंजाबी-कद्दू, मराठी - लालधूधिया, मलयालम-मथान, मट्टांगा, मणिपुरी-मैरेन, इंग्लिश-पम्पकिन ,ऍटम स्क्वॉश , विन्टर स्क्वॉश , रेड गऍर्ड, पम्पकिन , मेलन पम्पकिन।

मित्रों कद्दू कद्दू ही है जो 10 मिनट में सब्ज़ी में पक के तैयार हो जाता है। खट्टा मीठा नमकीन बनाया जा सकता है।जूस भी बनाया जा सकता है। हमारे चतुर्वेदी समाज में मट्ठे की सब्जी व कद्दू की सब्जी बहुत लोकप्रिय है।

कद्दू का उपयोग करें स्वास्थ्य लाभ पायें।

समाज समाचार

श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (फ़रौली/ गाजियाबाद) ने अपने ग्राम फ़रौली में अपने पूर्वजों की स्मृति में स्मृति भवन – "प्रभु शंकर – टीका शंकर" का नव निर्माण कराकर श्री रामचरित मानस पाठ, सत्यनारायण कथा एवं हवन का आयोजन 28 से 30 नवंबर 2020 तक संपन्न कराया। लोकेन्द्र जी की वर्षगांठ के शुभ अवसर पर मनीष जी द्वारा चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ 5100/– रुपये प्रदान किए।

–0–

पूजनीय स्व. भूपेंद्र नाथ चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा/बेलूड़, हावड़ा) की पुण्यतिथि पर श्री रजनीकांत चतुर्वेदी द्वारा अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 5000/– प्रदान किये। (र.क्र.368)

–0–

03 दिसंबर 2020 को श्रीमती पूजा चतुर्वेदी पत्नी श्री मयूर चतुर्वेदी सुपुत्र श्री ऋषिकेश चतुर्वेदी (तरसोखर/नॉएडा) ने NMIMS University से एम. बी. ए., एच आर की परीक्षा उत्तीर्ण की और 04 दिसंबर 20 को विप्रो कंपनी में उन्होंने मैनेजर (एच आर) के पद पर पदोन्नति प्राप्त की। इस अवसर पर ऋषिकेश जी ने महासभा सहायतार्थ 500/– रूपये प्रदान किये। (र.क्र. – 409)

–0–

चि. देवांशु चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती रेनू एवं श्री संजीव चतुर्वेदी सुपौत्र श्रीमती प्रेमवती चतुर्वेदी एवं स्व. शान्ति स्वरूप चतुर्वेदी (लखनऊ/जयपुर) ने हाल ही में Amdocs (India) Ltd. में सॉफ्टवेयर डेवेलोपर के पद पर पुणे में नियुक्ति प्राप्त की। इस अवसर पर श्रीमती प्रेमवती जी ने अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ रुपए 1100/ प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. – 410)

–0–

कु.स्तुति सुपुत्री श्रीमती रेनू एवं श्री संजीव चतुर्वेदी सुपौत्री श्रीमती प्रेमवती चतुर्वेदी एवं स्व. श्री शान्ति स्वरूप जी चतुर्वेदी ने MSC PHYSICS (Nano Technology) की परीक्षा उत्तीर्ण की.... बधाई

–0–

चि. आकाश सुपुत्री श्रीमती नीता – श्री पंकज चतुर्वेदी (होलीपुरा/पुणे) का शुभ विवाह सौ. प्रियांशी सुपुत्री श्रीमती गीता चतुर्वेदी – श्री राजीव चतुर्वेदी (मथुरा/कोलकाता) के साथ सानंद दिनांक 15 जून 2020 को पुणे में संपन्न हुआ। इस अवसर आपने पत्रिका सहायतार्थ 500/– रुपये व महासभा सहायतार्थ 500/– प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. 252)

–0–

चि. आर्षभ सुपुत्र श्री सुशील चतुर्वेदी एवं श्रीमती विभा चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल/बेंगलौर) का शुभ विवाह सौ. शक्ति सुपुत्री श्री संजय चतुर्वेदी एवं श्रीमती नीलम चतुर्वेदी (कमतरी/कानपुर/नॉएडा) के साथ दिनाँक 25 नवंबर 2020 को बेंगलौर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सुशील जी ने पत्रिका सहायतार्थ 2100/– रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.–399)

–0–

सौ. चारू चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी – एवं अनिल चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती कांता – श्री श्यामसुंदर चतुर्वेदी (भवानी मंडी) का शुभ विवाह चि. मनोज चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती संध्या एवं श्री नंदलाल चतुर्वेदी (बालापुर/ जयपुर) के साथ दिनांक 25.11.2020 को भवानी मंडी में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री अनिल चतुर्वेदी ने 2100/– रुपए महासभा सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. 419)

–0–

श्री मनोज चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती संध्या – श्री नंदलाल चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. श्रीमती कांति देवी – स्व. श्री मोती लाल चतुर्वेदी (बालापुर/जयपुर) का शुभ विवाह सौ. चारु चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी – श्री अनिल चतुर्वेदी (भवानीमंडी) के साथ 25 नवंबर 2020 को भवानी मंडी में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नंदलाल जी ने चंद्रिका सहायतार्थ 1100/– रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. 420)

–0–

चि. अंकुर सुपुत्र श्री तपेश कुमार चतुर्वेदी (फ़रौली/ग्वालियर) का शुभ विवाह सौ. सुगंध सुपुत्री श्रीमती सुमन चतुर्वेदी (करेंटी/आगरा) के साथ दिनांक 25.11.20 को आगरा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने चंद्रिका सहायतार्थ 501 रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. 427)

–0–

11 दिसम्बर 2020 को चि. हनीश पुत्र श्री गोरखनाथ – श्रीमती शोभा चतुर्वेदी पौत्र स्व0 त्रिवेणी सहाय जी – स्व. गौरा

देवी पान्डे (तालगॉव,आगरा) की पक्कायत भिलाई / इटावा निवासी कु. अन्तरा पुत्री श्री दिगन्त – श्रीमती रंजना चतुर्वेदी पौत्री स्व. रूप किशोर – श्रीमती प्रभा चतुर्वेदी के साथ तालगाँव में सम्पन्न हुई। लड़के के ताऊ श्री हीरा लाल पान्डे ने अन्य परिजनों आदि के लिए लायी भेंट आदि ग्रहण करने से विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। इस अवसर पर लड़के के ताऊ श्री मुरारी लाल जी चतुर्वेदी नें पत्रिका हेतु 1100/– रूपये एवं श्री प्रभंजय चतुर्वेदी ने भी पत्रिका हेतु 1100/–रुपये पत्रिका सहायतार्थ भेंट किये। बधाई। (र.क्र.434)

–0–

डॉ० बीना चतुर्वेदी का नव कथा संग्रह "माँ" आधुनिक हिन्दी साहित्य प्रेमियों के समक्ष एवं लोकार्थ प्रस्तुत है। गुलाबी नगर, जयपुर की विदुषी लेखिका डॉ० श्रीमती बीना चतुर्वेदी का प्रस्तुत कहानी संग्रह "माँ" ब्रह्माण्ड में व्याप्त परम तत्व के समकक्ष शक्ति की गहनता का चिन्तन लौकिक भाषा में सामाजिक अनुशीलनता, सांमजस्यता एवं मानवीय मूल्यो की सुरक्षा हेतु लोक हित में प्रस्तुत करने का प्रयास है। "माँ" को भारतीय पुरातन संस्कृति में सर्वोच्च प्रतिष्ठित दैविक संबंध का स्थान मिला है। माँ के रूप में स्त्री शक्ति असीमित है।

–0–

श्री एकांश चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री संजय चतुर्वेदी – श्रीमती कविता चतुर्वेदी सुपौत्र श्री देवकीनंदन चतुर्वेदी – श्रीमती ललता चतुर्वेदी (कोटा) का पाणिग्रहण संस्कार सौ.अपर्णा सुपुत्री श्रीमती चंचला एवं श्री दिनेश चतुर्वेदी

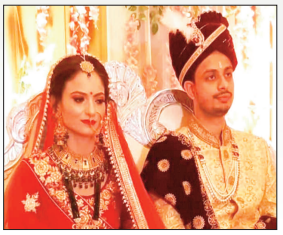

(महोली/करौली) के साथ दिनांक 27 नवंबर 2020 को कोटा में सानंद संपन्न हुआ इस अवसर पर श्री देवकीनंदन चतुर्वेदी जी ने 1100/– रुपए चंद्रिका सहायता प्रदान किए। बधाई। (र.क्र. 431)

–0–

चिरंजीव अमन सुपुत्र स्व. श्री गोकुल नाथ चतुर्वेदी – स्व. श्रीमती बैकुंठी देवी सुपुत्र श्री महेंद्र नाथ चतुर्वेदी एवं श्रीमती अलका चतुर्वेदी (मथुरा/हाथरस/भोपाल) का

शुभ विवाह सौभाग्यवती आकृति सुपुत्री श्री अंचल चतुर्वेदी – श्रीमती वंदना चतुर्वेदी (देहरादून/भोपाल) के साथ दिनांक 12 दिसंबर 2020 को भोपाल में संपन्न हुआ। इस अवसर पर महेंद्र जी ने चंद्रिका सहायतार्थ 1001/– महासभा सहायतार्थ 501/– महाविद्या देवी मंदिर सहायतार्थ 501/– प्रदान किए।

–0–

चि० अक्षय पुत्र श्री विजय कुमार – श्रीमती भारती चतुर्वेदी (तरसोखर/कलकत्ता) का शुभविवाह सौ० अपूर्वा पुत्री श्री जितेंद्र कुमार चतुर्वेदी – स्व० अलका चतुर्वेदी (कछपुरा/कानपुर) ने दिनाँक 11 दिसंबर 2020 को कानपुर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 2200/ रुपये प्रदान किये। हार्दिक बधाई। (र.क्र.444,446)

शाखा समाचार

दिल्ली

दिल्ली की कार्यकारिणीं की बैठक

आज दिनांक 13–12–2020 रविवार दोपहर 4 बजे कार्यकारिणी की बैठक ऑनलाइन संपन्न हुई। बैठक में श्री महेश चंद्र जी चतुर्वेदी अध्यक्ष, सुभाष जी तथा अश्विनी जी संरक्षक, लोकेन्द्र जी सचिव, कौशल जी उपाध्यक्ष, पल्लवी जी कोषाध्यक्ष, मनीष जी, पवित्र जी, सुधांशु जी, दिवाकर जी, मयंक जी सम्मिलित हुए। बैठक में महेश जी ने अपनी भविष्य की योजनाएं कार्यकारिणी सभा के सम्मुख प्रस्तुत किये। जिसमें सभा का बैंक खाता, खेलकूद व सांस्कृतिक आयोजन,क्षेत्रीय प्रतिनिधियों की नियुक्ति,सदस्यता आदि। जिसका उपस्थित सदस्यों ने भरपूर समर्थन किया।

इसके अलावा अश्विनी जी, संतोष जी, पवित्र जी, दिवाकर जी, पल्लवी जी, मनीष जी ने अपने विचार व्यक्त किये। क्षेत्रीय गतिविधियों को आगे बड़ाने का दायित्व– पवित्र जी दक्षिणी दिल्ली, दिवाकर व मयंक जी पूर्वी दिल्ली, मनीष जी पश्चिमी दिल्ली तथा कौशल जी को उत्तरी दिल्ली का दिया गया। पल्लवी जी द्वारा महिला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए विशेष रूप से कार्यकल्पों को संचालित करने का प्रस्ताव भी अनुमोदित किया गया। सभा के सभापति के नेतृत्व में सांस्कृतिक में प्रत्येक प्रतिभागी बालक बालिकाओं को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरुस्कार रुपये 1000/ – दिया। इन सम्मान की श्रृंखला में थे आराध्य चतुर्वेदी (स्वस्ति वाचन) ईशा, आकर्ष,

अबीर चतुर्वेदी (गायन) अंशिका, वैभवी, हिमांगी, विधि चतुर्वेदी (नृत्य)। अंत में अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया।

– लोकेंद्र चतुर्वेदी,सचिव

–0–

चतुर्वेदी व्यवसाय नेटवर्क की मीटिंग

दिनांक 06–12–2020 को चतुर्वेदी व्यवसाय नेटवर्क के मीटिंग ऑनलाइन संपन्न हुई।

मीटिंग के संयोजक श्री प्रसून चतुर्वेदी, भुबनेश्वर द्वारा सभी बाँधवों का स्वागत किया गया। इस बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों ने अपना परिचय दिया। जिसमें श्री मधुकर चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ दुबई), श्री विकास चतुर्वेदी, मुंबई, श्री सुलभ मिश्रा,कानपुर, डॉ. मनोज चतुर्वेदी, उज्जैन, श्री अभिनव चतुर्वेदी,कोटा,श्री रोहित चतुर्वेदी,आगरा, श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी श्री प्रसून चतुर्वेदी, प्रसून जी ने इस मंच का परिचय देते हुए बताया कि इसका उद्देश्य चतुर्वेदी बांधवों के व्यावसायिक जानकारी का आदान प्रदान का अवसर प्रदान करना है। जिससे समाज के उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सके। साथ ही समाज में स्टार्ट अप प्रतिभाओं का पता लगा कर उनका मार्गदर्शन करना, समाज में सफल उद्यमियों के अनुभवों का लाभ अन्य बांधवों तक पहुँचाना, समाज की महिला उद्यमियों को पहचान कर प्रोत्साहित करना विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार उत्पन्न करने वाले क्रिया कलापों में संलग्न बांधवों को सहायता पहुंचाना। सभी सदस्यों ने अपने अमूल्य विचारों से सभी को अवगत कराया। इस मंथन से निकले निष्कर्ष इस प्रकार रहे।

समाज के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को जो आई. आई. टी. इत्यादि की तैयारी करना कहते हैं उन्हें कोचिंग, एग्जाम, फीस इत्यादि के लिए समुचित व्यवस्था करना। समाज के सदस्यों के स्टार्ट अप प्रस्तावों को प्रतियोगिता द्वारा छांटना तथा उन्हें मेंटरशिप के द्वारा सहायता पहुँचाना। आगामी बैठकों में समाज के व्यवसाय से जुड़े सदस्यों को अपने सेवा तथा व्यवसाय के विषय में सभी को जानकारी देने का अवसर प्रदान करना। जिससे अन्य बांधव उनसे जुड़ कर व्यापार का विस्तार कर सकें और स्वयं भी लाभवनवित हो सके। बैठक के अंत में प्रसून जी ने सभी सदस्यों का धन्यवाद किया।

– **ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी,** संयोजक आईटी प्रकोष्ठ

–0–

लखनऊ

दिनांक 13.12.2020 को श्री माथुर चतुर्वेदी मंडल लखनऊ की कार्यकारिणी की बैठक मंडल अध्यक्ष लेखेन्द्र चतुर्वेदी "पुत्तन" जी के आवास पर संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता पुत्तन जी ने की। इस बैठक की शुरूआत अजय जी के एक सुंदर भजन से हुई। तदुपरांत कार्यवाही शुरू की गई। जिसमें सर्वप्रथम लखनऊ मंडल की बैलेंस शीट (खाता–बही) को सम्मानित सदस्यों के सम्मुख कोषाध्यक्ष श्रीमती पूनम जी ने रखते हुए उसको अध्ययन करने के लिये कहा। जिसको सभी ने गंभीरता से अध्ययन करने के बाद सर्वसम्मति से पास कर दिया और पूनम जी व युवा आडिटर श्री गौरव जी को विशेष तौर पर धन्यवाद दिया। इसके बाद मंत्री शिशिर जी द्वारा कोरोना काल में अवरुद्ध गतिविधियों को पुनः प्रारम्भ करने की इच्छाशक्ति दिखाते हुये वाह्य खेलकूद एवं पिकनिक कराये जाने का प्रस्ताव रखा जिसका सभी सदस्यों ने समर्थन किया। इसमें वाह्य खेलकूद हेतु दिसम्बर माह के अंतिम रविवार और पिकनिक हेतु सम्भवतः 31 जनवरी 2021 के विषय में चर्चा हुई जिसमें दो–तीन स्थानों की चर्चा के बाद तय किया गया कि स्थान निर्धारण अगले कुछ दिनों में कर लिया जायेगा।

पिकनिक हेतु पुत्तन जी ने अपने निर्णय में कहा कि पिकनिक के लिये मंडल कोई आवागमन का साधन उपलब्ध नहीं करायेगा। सभी बांधवों को अपने संसाधन से ही निर्धारित स्थल तक पहुंचना होगा। लखनऊ मंडल द्वारा पते हेतु बनाई जाने वाली वेबसाइट का निर्माण अपनी पूर्णतः पर है। इसका कार्य बहुत मन से श्री उज्जवल जलज जी आशियाना द्वारा बहुत ही मेहनत से किया जा रहा है जो कि निर्माण के अपने अंतिम चरण में है। इसका उज्जवल द्वारा सदस्यों के सम्मुख प्रदर्शन भी किया गया। जिसको देखकर सभी ने उनके प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। साथ ही श्री जलज जी को इसका व्यय वहन करने हेतु धन्यवाद भी दिया।

बैठक के अंत में पुत्तन जी एवं परिवार द्वारा सुमधुर, सुस्वादिष्ट जलपान के लिये मंत्री जी द्वारा धन्यवाद प्रेषित किया गया। बैठक में पुत्तन जी, शिशिर जी, श्रीमती पूनम जी, रमेश जी, आनन्द जी, राजीव जी, ललित जी, दिलीप जी, जलज जी, गुल्लन जी, बिनय जी, यदुवेश जी पुरा,अजय जी,यदुवेश जी तालगांव, अरुण जी, प्रदीप "मुन्ना" जी, मृगेंद्र जी, जितेन्द्र जी, मंजुल जी, उज्जवल जी आदि उपस्थित रहे।

–**लेखेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

शोक समाचार

* श्री राजीव चतुर्वेदी सुपुत्र स्वर्गीय श्री विनोद चतुर्वेदी,जेलर (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 26.11.20 को ग्वालियर में हो गया है।
* श्रीमती इंदिरा चतुर्वेदी पत्नी श्री रमेश चतुर्वेदी (होलीपुरा/जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 28.11.20 को जयपुर में उनके निवास स्थान पर हो गया।
* कमला मिश्रा (पूर्व प्राचार्य) (मैनपुरी/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 27.11.20 को हो गया।
* श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी (तरसोखर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 5/12/20 को ग्वालियर में हो गया।
* श्री सुबोध चतुर्वेदी सुपुत्र श्री सतीश चतुर्वेदी (सिकन्दरपुर/झाँसी) का स्वर्गवास मुम्बई में दिनाँक 5/12/20 को हो गया।
* श्री ललित किशोर जी (फरौली/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 5/12/20 को ग्वालियर में हो गया।
* श्री रमाकांत चतुर्वेदी आत्मज स्व. राम किशोर जी (फिरोजाबाद/श्योपुर) का असामयिक स्वर्गवास दिनाँक 7 दिसंबर 2020 को श्योपुर में हो गया।
* श्री राकेश चन्द चतुर्वेदी पुत्र श्री चक्खनलाल चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/ अजमेर) का स्वर्गवास दिनाँक 9/12/20 को अजमेर में हो गया।
* श्रीमती मृदुला जी चतुर्वेदी पत्नी अनिल जी (कछपुरा/लखनऊ) का देहावसान दिनाँक 09/12/2020 को लखनऊ में हो गया।
* श्री राकेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री भैरों प्रसाद जी चतुर्वेदी (बांदीकुई / जयपुर / मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 10.12.2020 को हो गया।
* श्री प्रहलाद दास चतुर्वेदी पुत्र स्व. राम दास चतुर्वेदी (बटेश्वर /लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 11 दिसम्बर 2020 को लखनऊ में हो गया।
* स्व. भानु प्रकाश चतुर्वेदी सुपुत्र लालता प्रसाद चौबे (तरसोखर/सीतापुर) का स्वर्गवास दिनाँक 25 नवंबर 2020 को सीतापुर में हो गया।
* श्रीमती मंजू देवी पत्नी स्व0 श्री हेमंत चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 13 दिसम्बर 2020 को हो गया।
* श्रीमती विमला देवी पत्नी स्व. महेश प्रसाद जी,पूर्व सभापति, महासभा (मैनपुरी/वाराणसी) का स्वर्गवास 13 दिसम्बर 2020 को वाराणसी में हो गया।
* श्रीमती लक्ष्मी देवी पत्नी स्व. छक्कन लाल जी (तरसोखर/भिंड) का स्वर्गवास दिनाँक 14.12.2020 को भिंड में हो गया।
* डॉ. दीपेन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/नोयडा) का स्वर्गवास दिनाँक 18.12.2020 को नोएडा में हो गया। आप विगत कुछ समय से अस्वस्थ थे।
* श्री सतीशचंद्र चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री बद्रीप्रसाद चतुर्वेदी, (मथुरा/ भोपाल) स्वर्गवास दिनाँक 18.12.2020 को भोपाल में हो गया।
* श्री प्रभात चतुर्वेदी (मैनपुरी/वाराणसी) का स्वर्गवास दिनाँक 19.12.20 की रात को वाराणसी में हो गया।
* श्रीमती सरोज पत्नी स्व. योगेन्द्र कुमार चतुर्वेदी (पिनाहट/ लखनऊ/बड़ोदा) का स्वर्गवास मुम्बई में 19.12.2020 को हो गया।
* श्री देवेंद्र नाथ जी (होलीपुरा / कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 20.12.20 को जालंधर में हो गया।
* श्री पी. एल. चतुर्वेदी (कुलाधिपति सेंट्रल यूनिवर्सिटी हरियाणा) का 19.12.20 स्वर्गवास जयपुर में हो गया है। आप भाजपा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, राजस्थान डॉ. अरुण चतुर्वेदी के पिताजी है।
* श्री राजीव चतुर्वेदी (कमल) (सिकंदरपुर/नोयडा) का स्वर्गवास नोयडा में दिनाँक 19.12.2020 को नोयडा में हो गया। आप दिलीप सिकन्दरपुरिया (लखनऊ) के बड़े भाई थे।
* श्री सुशील चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 24.12.20 को आगरा में हो गया।
* श्रीमती बिन्नी चतुर्वेदी पत्नी श्री गोपाल कृष्ण चतुर्वेदी (होलीपुरा/मथुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 23.12.20 को जयपुर जयपुर में हो गया।